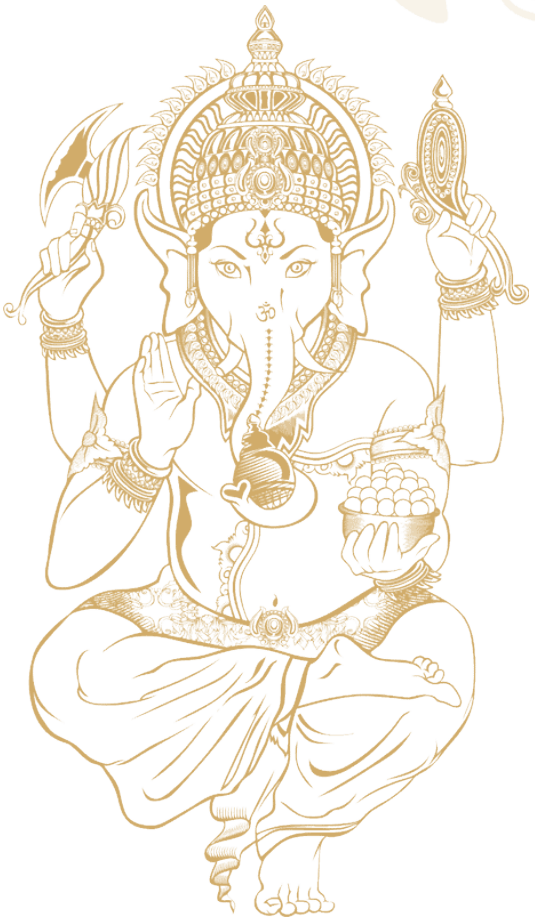

parth pawar

Kainath

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 120930401

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
21/03/1990	जन्म तिथि	26/12/2000
बुधवार	दिन	मंगलवार
घंटे 15:10:10	जन्म समय	22:35:48 घंटे
घटी 21:08:49	जन्म समय(घटी)	38:35:04 घटी
India	देश	India
Mumbai	स्थान	Chandigarh
18:58:00 उत्तर	अक्षांश	30:43:00 उत्तर
72:50:00 पूर्व	रेखांश	76:47:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:40	स्थानिक संस्कार	-00:22:52 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:42:38	सूर्योदय	07:18:46
18:49:36	सूर्यास्त	17:28:30
23:43:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:59

कर्क	लग्न	सिंह
चन्द्र	लग्न लग्नाधिपति	सूर्य
धनु	राशि	धनु
गुरु	राशि-स्वामी	गुरु
उत्तराषाढ़ा	नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
1	चरण	3
परिघ	योग	ध्रुव
वणिज	करण	बव
भे-भैरव	जन्म नामाक्षर	फा-फाल्गुनी
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	मानव
नकुल	योनि	वानर
मनुष्य	गण	मनुष्य
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
मूषक	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 8मा 19दि	16:37:44	कर्क	लग्न	सिंह	17:44:54	शुक्र 6वर्ष 9मा 0दि
राहु	06:47:14	मीन	सूर्य	धनु	11:22:36	मंगल
09/12/2012	27:17:13	धनु	चंद्र	धनु	22:09:58	27/09/2023
09/12/2030	13:29:57	मक	मंगल	तुला	07:58:00	27/09/2030
राहु 22/08/2015	09:04:07	मीन	बुध	धनु	11:53:50	मंगल 23/02/2024
गुरु 15/01/2018	08:03:39	मिथु	गुरु व	वृष	08:47:19	राहु 13/03/2025
शनि 21/11/2020	20:39:28	मक	शुक्र	मक	27:12:21	गुरु 17/02/2026
बुध 10/06/2023	00:02:15	मक	शनि व	वृष	00:58:31	शनि 29/03/2027
केतु 28/06/2024	21:49:17	मक	राहु	मिथु	21:35:46	बुध 25/03/2028
शुक्र 28/06/2027	21:49:17	कर्क	केतु	धनु	21:35:46	केतु 21/08/2028
सूर्य 22/05/2028	15:37:43	धनु	हर्ष	मक	24:32:02	शुक्र 21/10/2029
चन्द्र 21/11/2029	20:39:47	धनु	नेप	मक	11:16:41	सूर्य 26/02/2030
मंगल 09/12/2030	23:48:17	तुला व	प्लूटो	वृश्चि	19:42:40	चन्द्र 27/09/2030

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:43:26 चित्रपक्षीय अयनांश **23:51:59**

लग्न-चलित

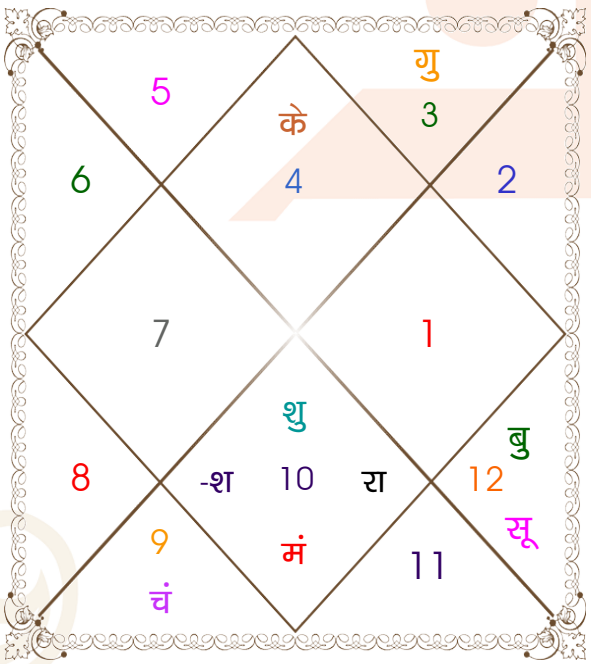

लग्न-चलित

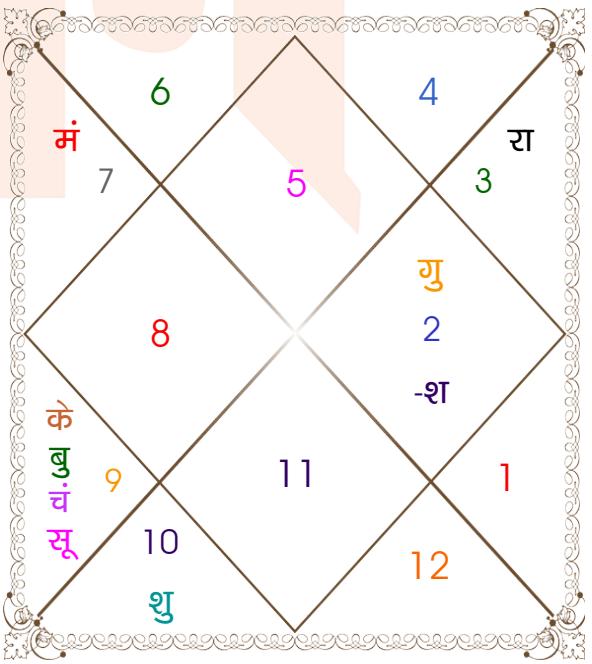

चन्द्र कुंडली

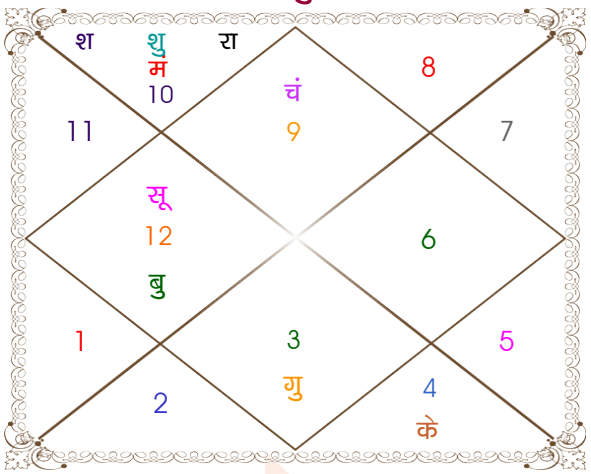

चन्द्र कुंडली

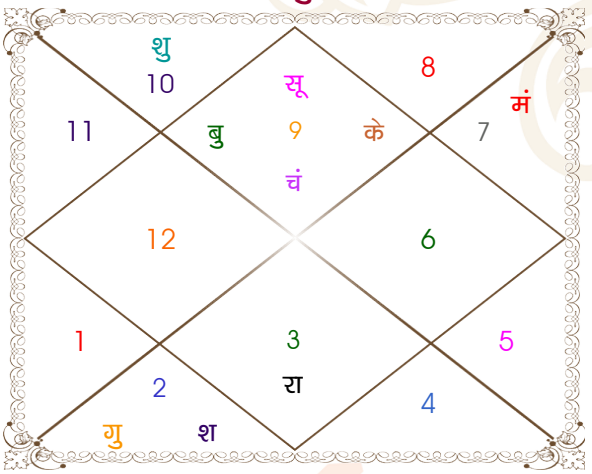

सूर्य कुंडली

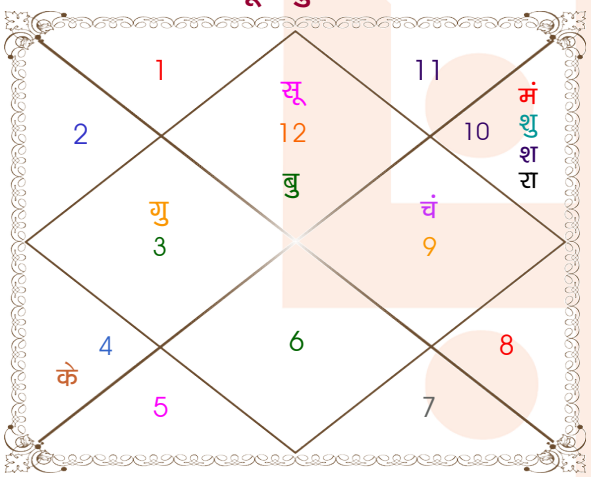

सूर्य कुंडली

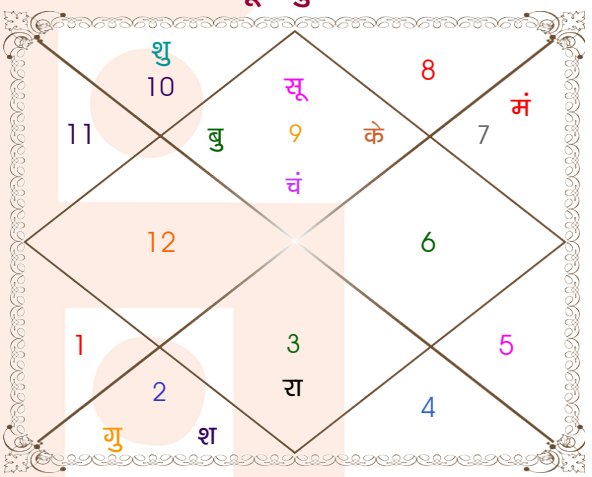

नवमांश कुंडली

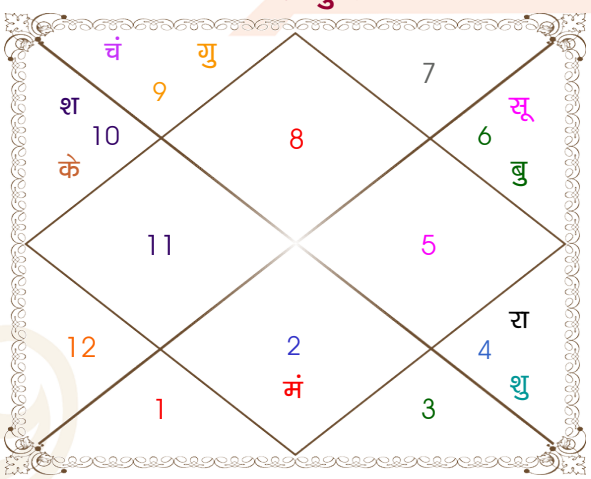

नवमांश कुंडली

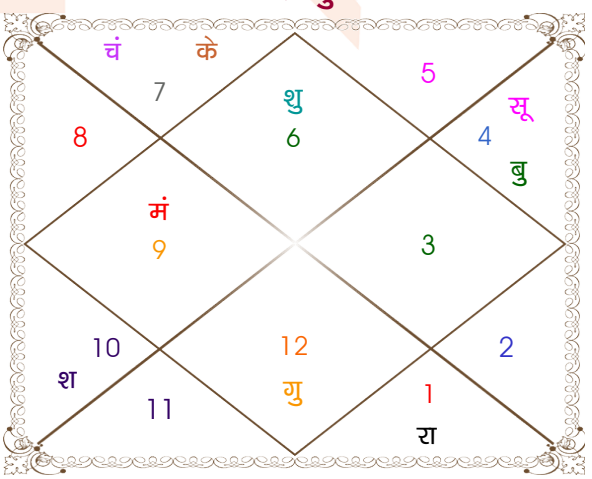

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 8 मास 2 दिन

के.पी. अयनांश : 23:37:01

फॉरच्युना : वृष 07:14:08

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	06:53:39	गुरु	शनि	बुध	गुरु
चंद्र		धनु	27:23:38	गुरु	सूर्य	चंद्र	चंद्र
मंगल		मक	13:36:21	शनि	चंद्र	राहु	चंद्र
बुध		मीन	09:10:32	गुरु	शनि	शुक्र	राहु
गुरु		मिथु	08:10:03	बुध	राहु	राहु	शुक्र
शुक्र		मक	20:45:53	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
शनि		मक	00:08:40	शनि	सूर्य	राहु	बुध
राहु		मक	21:55:42	शनि	चंद्र	शुक्र	शनि
केतु		कर्क	21:55:42	चंद्र	बुध	सूर्य	शनि
हर्ष		धनु	15:44:08	गुरु	शुक्र	सूर्य	राहु
नेप		धनु	20:46:12	गुरु	शुक्र	गुरु	बुध
प्लूटो	व	तुला	23:54:42	शुक्र	गुरु	बुध	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	16:44:09	चंद्र	बुध	बुध	बुध
2	सिंह	13:15:23	सूर्य	केतु	बुध	शनि
3	कन्या	13:09:15	बुध	चंद्र	राहु	केतु
4	तुला	15:17:46	शुक्र	राहु	शुक्र	शुक्र
5	वृश्चि	17:09:49	मंगल	बुध	बुध	शुक्र
6	धनु	17:31:12	गुरु	शुक्र	मंगल	गुरु
7	मक	16:44:09	शनि	चंद्र	शनि	शुक्र
8	कुंभ	13:15:23	शनि	राहु	बुध	सूर्य
9	मीन	13:09:15	गुरु	शनि	राहु	राहु
10	मेष	15:17:46	मंगल	शुक्र	शुक्र	बुध
11	वृष	17:09:49	शुक्र	चंद्र	शनि	मंगल
12	मिथु	17:31:12	बुध	राहु	सूर्य	चंद्र

भाव कुंडली

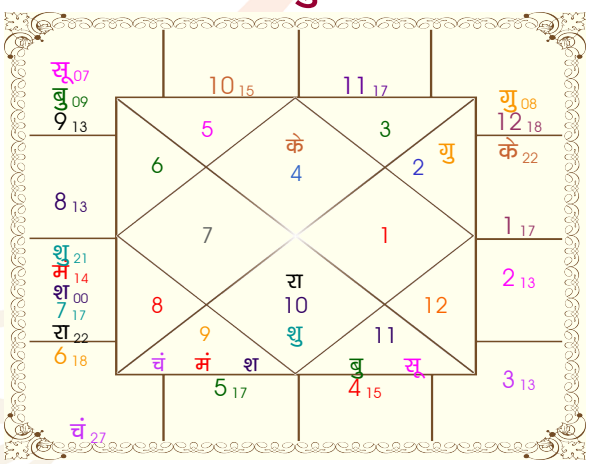

भोग्य दशा काल : शुक्र 6 वर्ष 7 मास 6 दिन

के.पी. अयनांश : 23:46:00

फॉरच्युना : सिंह 28:38:15

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	11:28:35	गुरु	केतु	बुध	बुध
चंद्र		धनु	22:15:57	गुरु	शुक्र	शनि	बुध
मंगल		तुला	08:03:59	शुक्र	राहु	राहु	शुक्र
बुध		धनु	11:59:49	गुरु	केतु	बुध	शुक्र
गुरु	व	वृष	08:53:18	शुक्र	सूर्य	शुक्र	राहु
शुक्र		मक	27:18:20	शनि	मंगल	गुरु	सूर्य
शनि	व	वृष	01:04:31	शुक्र	सूर्य	राहु	चंद्र
राहु		मिथु	21:41:45	बुध	गुरु	गुरु	राहु
केतु		धनु	21:41:45	गुरु	शुक्र	गुरु	राहु
हर्ष		मक	24:38:01	शनि	मंगल	राहु	गुरु
नेप		मक	11:22:40	शनि	चंद्र	मंगल	शनि
प्लूटो		वृश्चि	19:48:39	मंगल	बुध	शुक्र	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	17:50:53	सूर्य	शुक्र	मंगल	केतु
2	कन्या	14:21:01	बुध	चंद्र	गुरु	शनि
3	तुला	14:26:44	शुक्र	राहु	केतु	केतु
4	वृश्चि	16:34:52	मंगल	शनि	गुरु	राहु
5	धनु	18:43:00	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
6	मक	19:24:57	शनि	चंद्र	बुध	शनि
7	कुंभ	17:50:53	शनि	राहु	सूर्य	शनि
8	मीन	14:21:01	गुरु	शनि	राहु	शुक्र
9	मेष	14:26:44	मंगल	शुक्र	शुक्र	राहु
10	वृष	16:34:52	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
11	मिथु	18:43:00	बुध	राहु	चंद्र	शनि
12	कर्क	19:24:57	चंद्र	बुध	शुक्र	शुक्र

भाव कुंडली

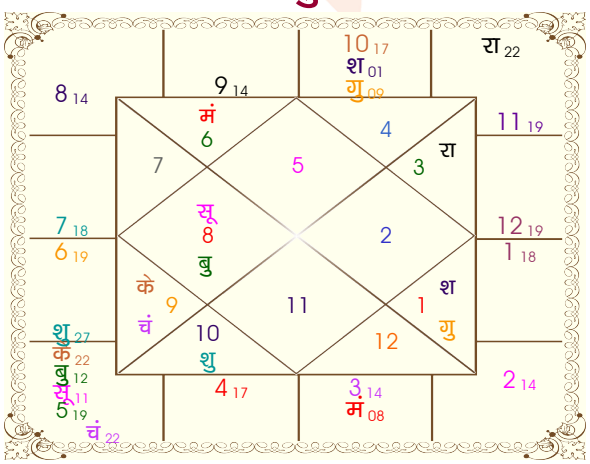

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- मंगल- शुक्र- राहु- केतु,
2	सूर्य- चंद्र- शनि-
3	बुध- केतु-
4	शुक्र-
5	मंगल-
6	सूर्य, चंद्र, मंगल+ बुध, गुरु- शुक्र, शनि, राहु,
7	सूर्य- बुध- गुरु, शुक्र, शनि- राहु,
8	सूर्य+ चंद्र, बुध+ शनि+ केतु,
9	गुरु-
10	मंगल-
11	गुरु, शुक्र-
12	बुध- केतु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- गुरु- शनि-
2	मंगल, बुध- शुक्र,
3	चंद्र- शुक्र- केतु-
4	सूर्य, मंगल- बुध, गुरु, शुक्र- शनि,
5	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु- राहु- केतु,
6	चंद्र, शुक्र, शनि- केतु,
7	शनि-
8	गुरु- राहु-
9	मंगल- गुरु, शुक्र- शनि, राहु,
10	चंद्र- शुक्र- केतु-
11	मंगल, बुध- राहु,
12	चंद्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 6, 7- 8+
चंद्र	1- 2- 6, 8,
मंगल	1- 5- 6+ 10-
बुध	3- 6, 7- 8+ 12-
गुरु	6- 7, 9- 11,
शुक्र	1- 4- 6, 7, 11-
शनि	2- 6, 7- 8+
राहु	1- 6, 7,
केतु	1, 3- 8, 12-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 4, 5,
चंद्र	3- 5, 6, 10- 12-
मंगल	2, 4- 9- 11,
बुध	2- 4, 5, 11-
गुरु	1- 4, 5- 8- 9,
शुक्र	2, 3- 4- 6, 9- 10-
शनि	1- 4, 6- 7- 9,
राहु	5- 8- 9, 11,
केतु	3- 5, 6, 10-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

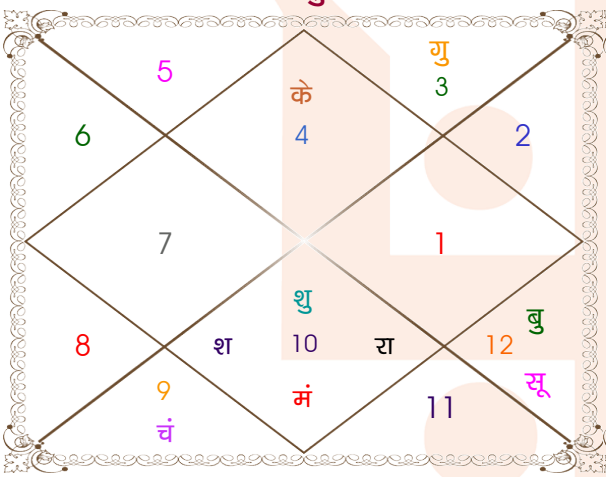

देह विचारः

लग्न कुंडली

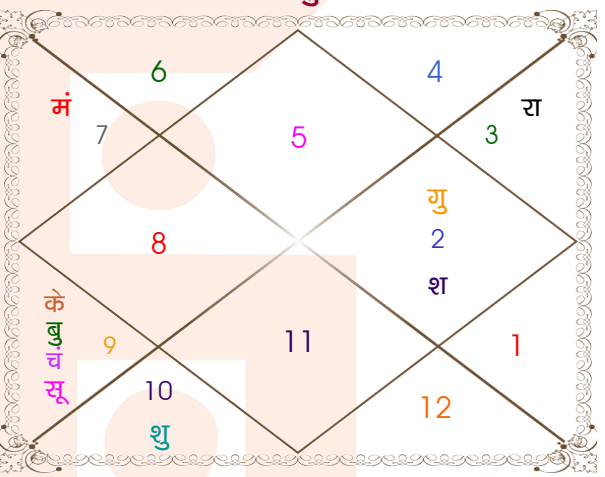

देह विचारः

होरा कुंडली

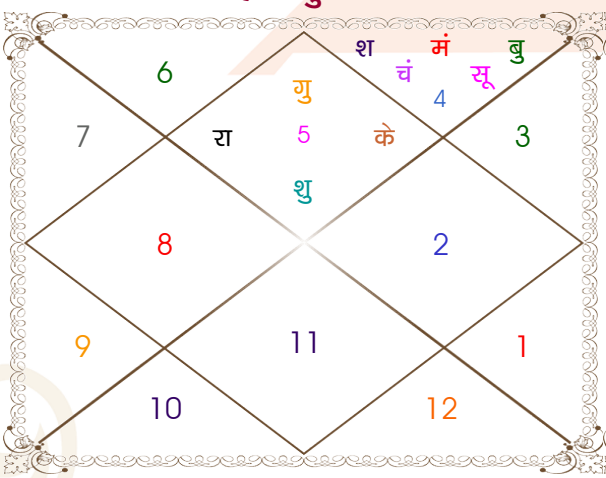

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

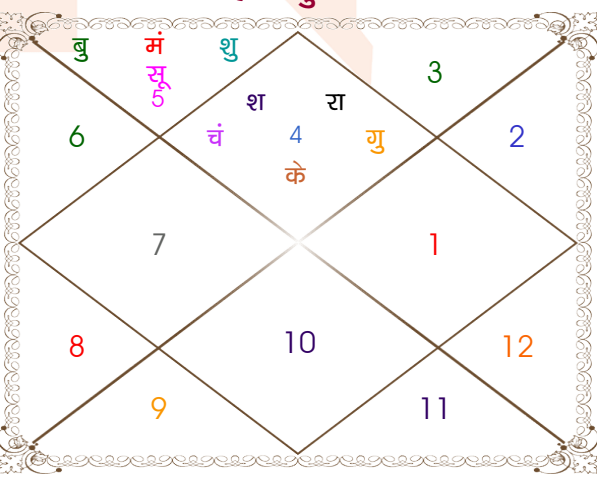

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

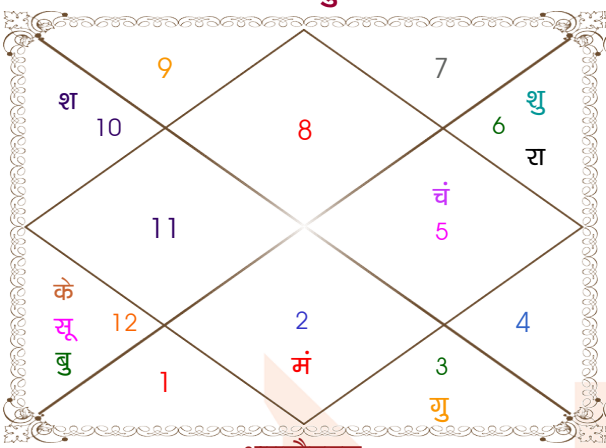

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

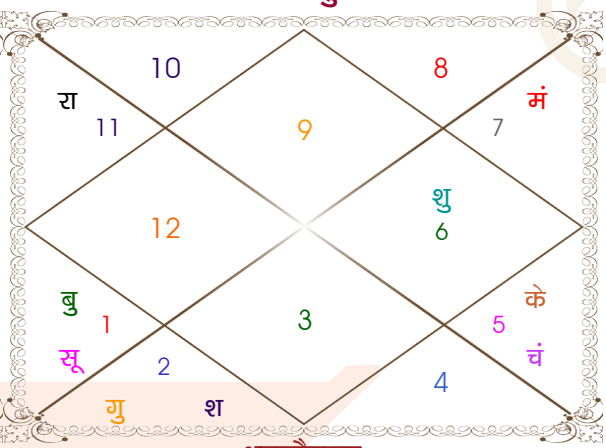

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

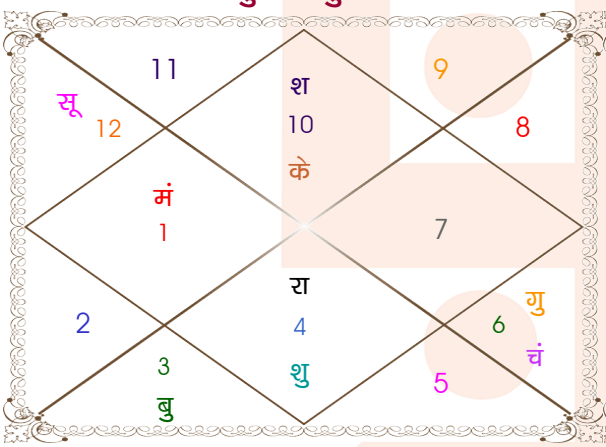

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

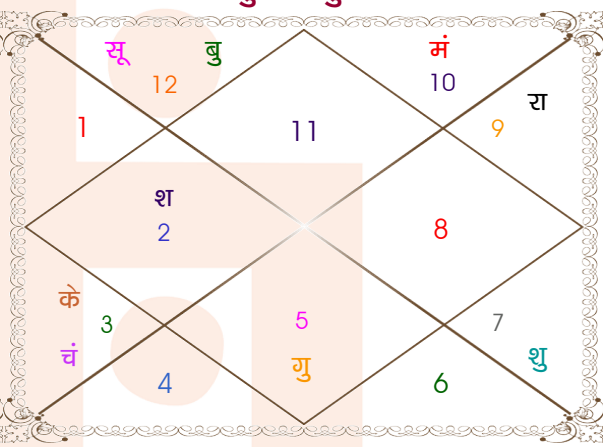

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

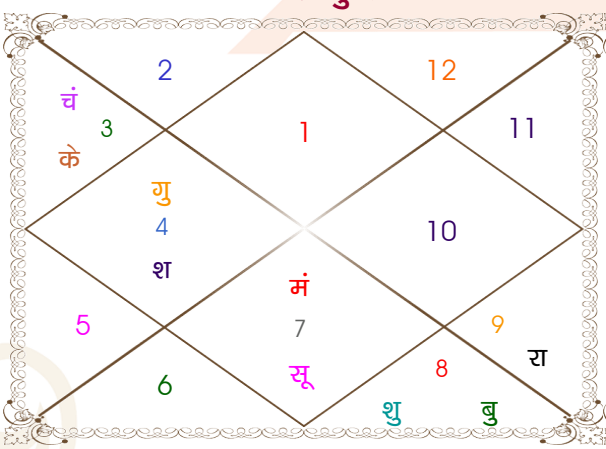

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

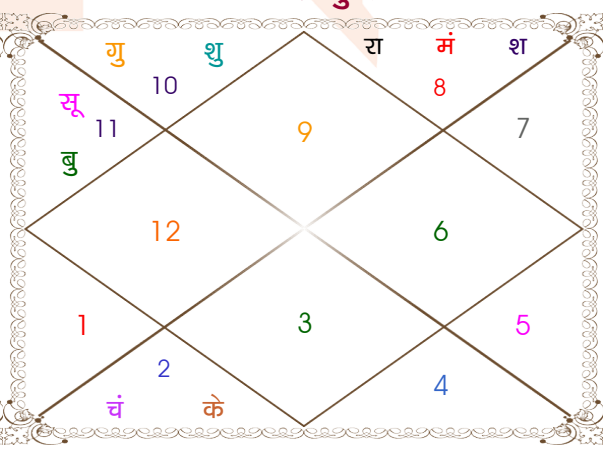

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

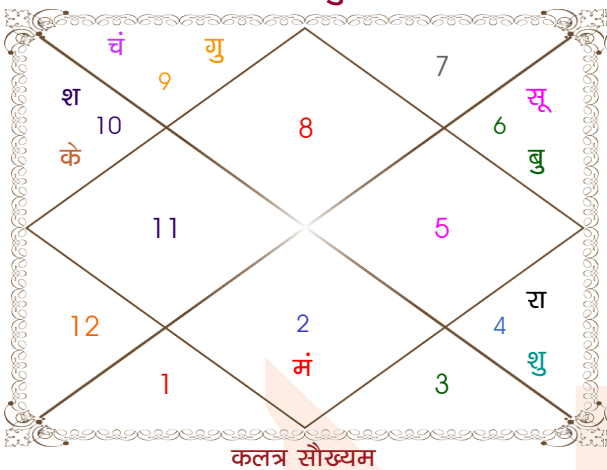

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

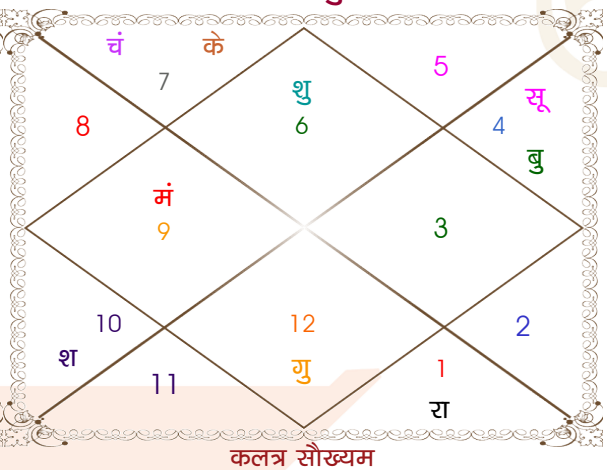

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

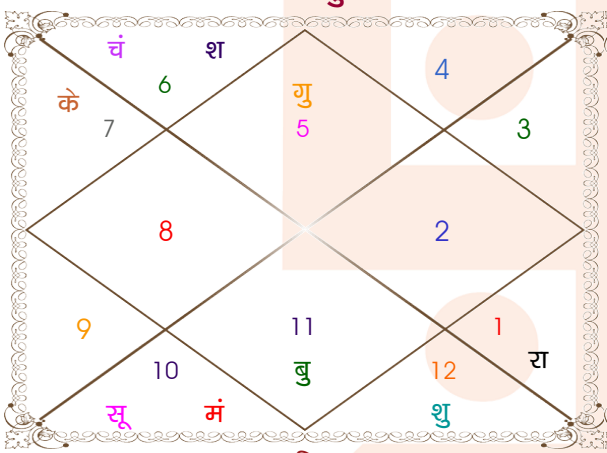

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

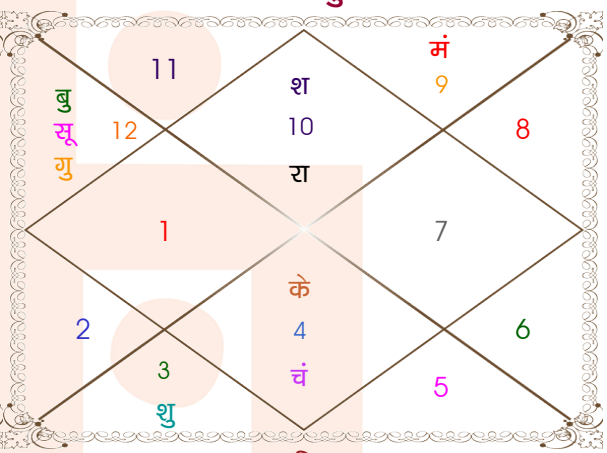

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

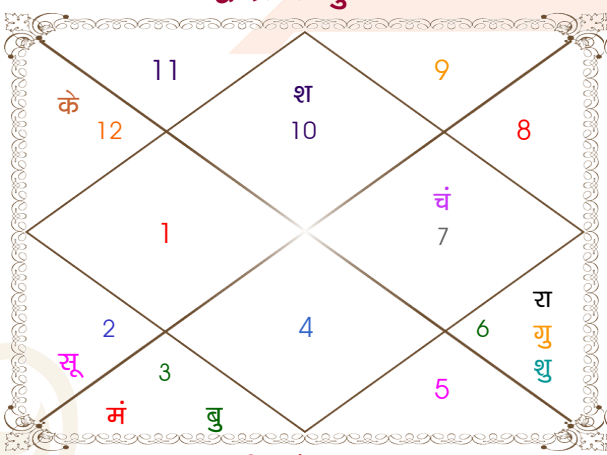

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

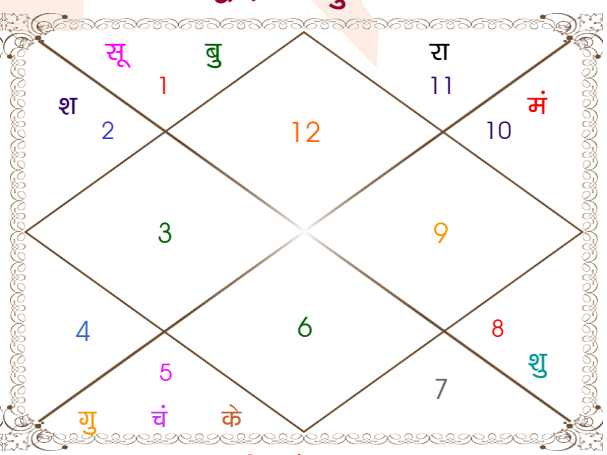

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

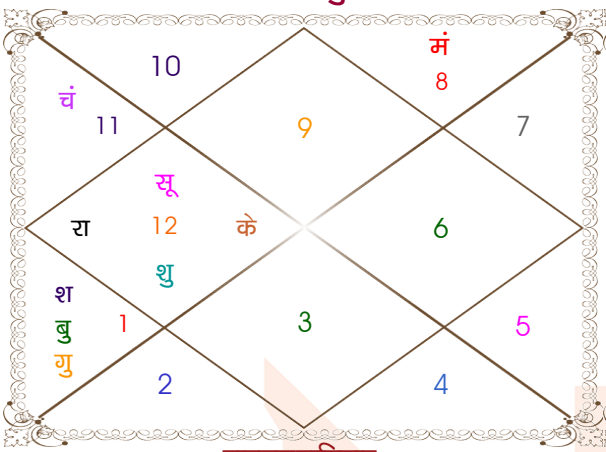

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

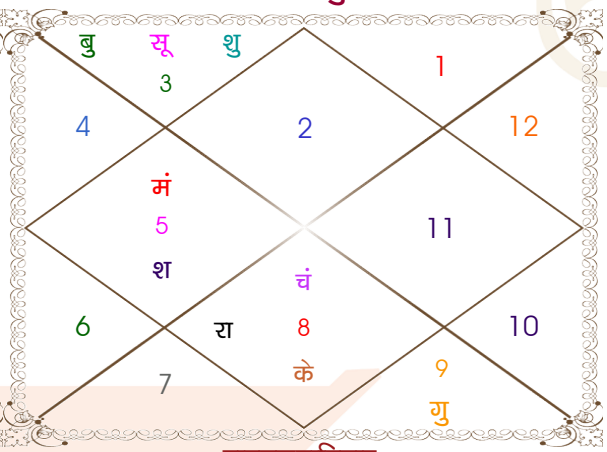

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

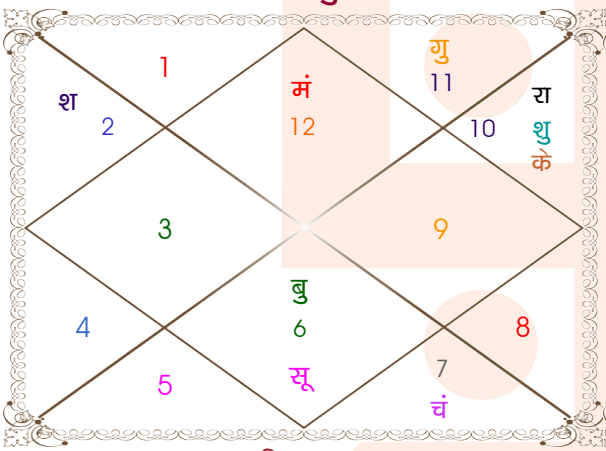

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

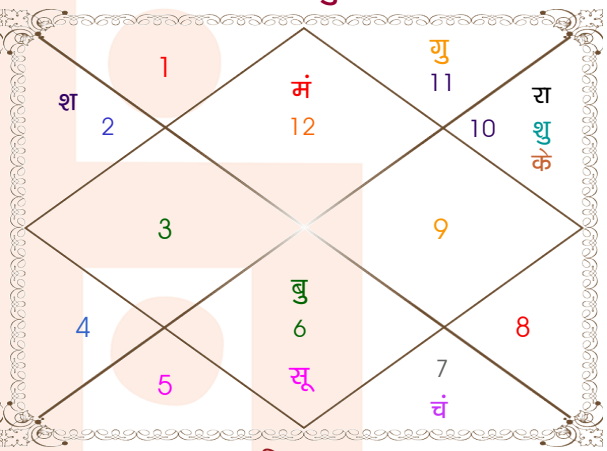

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

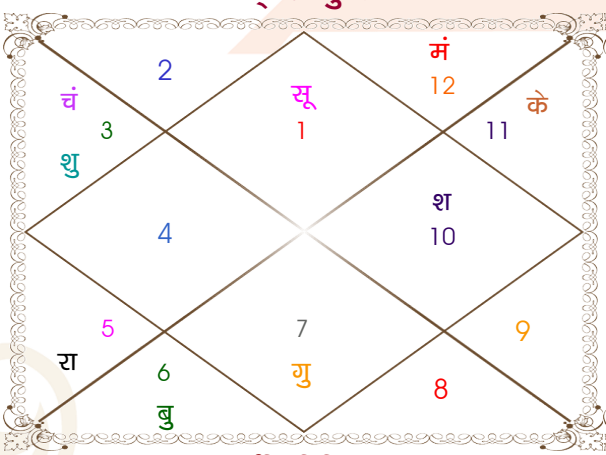

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

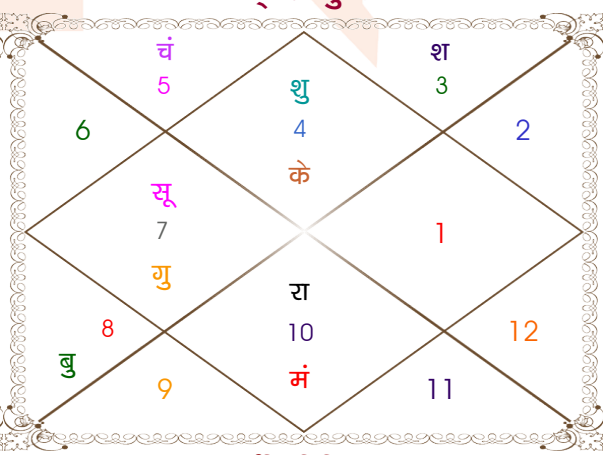

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - parth pawar

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Kainath

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	1	5	3	3	4	3	5	6	5	4	4	5	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
कुल	2	5	5	4	4	4	6	4	3	5	3	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	5	3	2	5	3	7	5	3	2	6	5	3	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
कुल	3	5	5	5	2	5	6	3	4	1	5	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	4	2	1	4	5	1	5	5	2	3	4	3	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
कुल	4	6	2	1	4	1	6	3	2	3	5	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	3	5	5	0	6	6	4	4	6	2	7	6	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
कुल	5	7	3	2	6	4	5	6	3	5	3	5	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	6	4	5	3	5	5	5	6	2	5	6	4	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
कुल	5	5	5	4	6	5	6	4	4	5	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	5	5	6	5	4	1	3	5	4	6	6	2	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	5
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
कुल	4	2	2	3	6	5	5	4	5	4	6	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	2	2	3	3	5	4	1	1	2	6	5	5	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
कुल	1	3	3	4	3	5	6	3	3	2	2	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	0	0	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	1	3	4	5	4	4	5	4	5	5	4	5	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	1	7	2	3	4	5	7	3	2	4	5	6	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

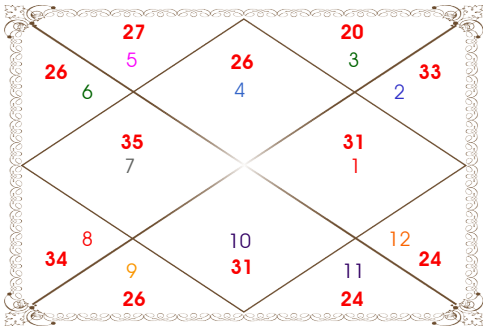

सर्वाष्टकवर्ग

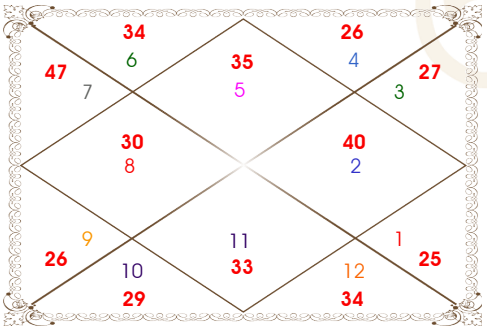

parth pawar

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	4	1	1	2	6	5	5	2	2	3	39
गुरु	6	4	6	4	5	3	5	5	5	6	2	5	56
मंगल	4	5	1	5	5	2	3	4	3	4	2	1	39
सूर्य	5	3	3	4	3	5	6	5	4	4	5	1	48
शुक्र	5	4	1	3	5	4	6	6	2	5	5	6	52
बुध	5	5	0	6	6	4	4	6	2	7	6	3	54
चंद्र	3	7	5	3	2	6	5	3	5	3	2	5	49
बिन्दु	31	33	20	26	27	26	35	34	26	31	24	24	337
रेखा	25	23	36	30	29	30	21	22	30	25	32	32	335

Kainath

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	7	2	3	4	5	7	3	2	4	5	6	49
सूर्य	2	5	5	4	4	4	6	4	3	5	3	3	48
चंद्र	3	5	5	5	2	5	6	3	4	1	5	5	49
मंगल	4	6	2	1	4	1	6	3	2	3	5	2	39
बुध	5	7	3	2	6	4	5	6	3	5	3	5	54
गुरु	5	5	5	4	6	5	6	4	4	5	4	3	56
शुक्र	4	2	2	3	6	5	5	4	5	4	6	6	52
शनि	1	3	3	4	3	5	6	3	3	2	2	4	39
बिन्दु	25	40	27	26	35	34	47	30	26	29	33	34	386
रेखा	39	24	37	38	29	30	17	34	38	35	31	30	382

शोध्य पिंड - parth pawar

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	98	113	93	131	83	139	143
ग्रह पिंड	25	65	40	60	110	50	60
शोध्य पिंड	123	178	133	191	193	189	203

शोध्य पिंड - Kainath

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	154	93	100	142	145	46	117	93
ग्रह पिंड	100	61	98	121	68	16	53	77
शोध्य पिंड	254	154	198	263	213	62	170	170

विंशोत्तरी दशा

सूर्य 5 वर्ष 8 मास 19 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
21/03/1990		10/12/1995		09/12/2005	
10/12/1995		09/12/2005		09/12/2012	
सूर्य	29/03/1990	चंद्र	09/10/1996	मंगल	07/05/2006
चंद्र	27/09/1990	मंगल	10/05/1997	राहु	26/05/2007
मंगल	02/02/1991	राहु	09/11/1998	गुरु	01/05/2008
राहु	28/12/1991	गुरु	10/03/2000	शनि	10/06/2009
गुरु	15/10/1992	शनि	09/10/2001	बुध	07/06/2010
शनि	27/09/1993	बुध	11/03/2003	केतु	03/11/2010
बुध	04/08/1994	केतु	10/10/2003	शुक्र	03/01/2012
केतु	09/12/1994	शुक्र	10/06/2005	सूर्य	10/05/2012
शुक्र	10/12/1995	सूर्य	09/12/2005	चंद्र	09/12/2012

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
09/12/2012		09/12/2030		09/12/2046	
09/12/2030		09/12/2046		09/12/2065	
राहु	22/08/2015	गुरु	27/01/2033	शनि	12/12/2049
गुरु	15/01/2018	शनि	10/08/2035	बुध	21/08/2052
शनि	21/11/2020	बुध	15/11/2037	केतु	30/09/2053
बुध	10/06/2023	केतु	22/10/2038	शुक्र	30/11/2056
केतु	28/06/2024	शुक्र	22/06/2041	सूर्य	12/11/2057
शुक्र	28/06/2027	सूर्य	10/04/2042	चंद्र	13/06/2059
सूर्य	22/05/2028	चंद्र	10/08/2043	मंगल	22/07/2060
चंद्र	21/11/2029	मंगल	16/07/2044	राहु	29/05/2063
मंगल	09/12/2030	राहु	09/12/2046	गुरु	09/12/2065

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
09/12/2065		09/12/2082		09/12/2089	
09/12/2082		09/12/2089		10/12/2109	
बुध	07/05/2068	केतु	08/05/2083	शुक्र	10/04/2093
केतु	04/05/2069	शुक्र	07/07/2084	सूर्य	10/04/2094
शुक्र	04/03/2072	सूर्य	12/11/2084	चंद्र	10/12/2095
सूर्य	08/01/2073	चंद्र	13/06/2085	मंगल	08/02/2097
चंद्र	10/06/2074	मंगल	09/11/2085	राहु	09/02/2100
मंगल	07/06/2075	राहु	27/11/2086	गुरु	11/10/2102
राहु	24/12/2077	गुरु	03/11/2087	शनि	10/12/2105
गुरु	31/03/2080	शनि	12/12/2088	बुध	10/10/2108
शनि	09/12/2082	बुध	09/12/2089	केतु	10/12/2109

शुक्र 6 वर्ष 9 मास 0 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
26/12/2000		27/09/2007		27/09/2013	
27/09/2007		27/09/2013		27/09/2023	
00/00/0000	सूर्य	15/01/2008	चंद्र	28/07/2014	
00/00/0000	चंद्र	15/07/2008	मंगल	26/02/2015	
00/00/0000	मंगल	20/11/2008	राहु	27/08/2016	
00/00/0000	राहु	15/10/2009	गुरु	27/12/2017	
00/00/0000	गुरु	03/08/2010	शनि	28/07/2019	
26/12/2000	शनि	16/07/2011	बुध	27/12/2020	
शनि 27/09/2003	बुध	22/05/2012	केतु	28/07/2021	
बुध 28/07/2006	केतु	26/09/2012	शुक्र	29/03/2023	
केतु 27/09/2007	शुक्र	27/09/2013	सूर्य	27/09/2023	

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
27/09/2023		27/09/2030		26/09/2048	
27/09/2030		26/09/2048		26/09/2064	
मंगल	23/02/2024	राहु	09/06/2033	गुरु	15/11/2050
राहु	13/03/2025	गुरु	03/11/2035	शनि	28/05/2053
गुरु	17/02/2026	शनि	09/09/2038	बुध	03/09/2055
शनि	29/03/2027	बुध	28/03/2041	केतु	09/08/2056
बुध	25/03/2028	केतु	16/04/2042	शुक्र	10/04/2059
केतु	21/08/2028	शुक्र	15/04/2045	सूर्य	27/01/2060
शुक्र	21/10/2029	सूर्य	10/03/2046	चंद्र	28/05/2061
सूर्य	26/02/2030	चंद्र	09/09/2047	मंगल	04/05/2062
चंद्र	27/09/2030	मंगल	26/09/2048	राहु	26/09/2064

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
26/09/2064		27/09/2083		27/09/2100	
27/09/2083		27/09/2100		28/09/2107	
शनि	30/09/2067	बुध	23/02/2086	केतु	24/02/2101
बुध	09/06/2070	केतु	20/02/2087	शुक्र	26/04/2102
केतु	19/07/2071	शुक्र	21/12/2089	सूर्य	01/09/2102
शुक्र	18/09/2074	सूर्य	27/10/2090	चंद्र	02/04/2103
सूर्य	31/08/2075	चंद्र	28/03/2092	मंगल	29/08/2103
चंद्र	31/03/2077	मंगल	25/03/2093	राहु	15/09/2104
मंगल	10/05/2078	राहु	12/10/2095	गुरु	22/08/2105
राहु	16/03/2081	गुरु	17/01/2098	शनि	01/10/2106
गुरु	27/09/2083	शनि	27/09/2100	बुध	28/09/2107

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
28/06/2024		28/06/2027		22/05/2028	
28/06/2027		22/05/2028		21/11/2029	
शुक्र	27/12/2024	सूर्य	15/07/2027	चंद्र	07/07/2028
सूर्य	20/02/2025	चंद्र	11/08/2027	मंगल	08/08/2028
चंद्र	22/05/2025	मंगल	30/08/2027	राहु	29/10/2028
मंगल	25/07/2025	राहु	19/10/2027	गुरु	10/01/2029
राहु	06/01/2026	गुरु	01/12/2027	शनि	07/04/2029
गुरु	01/06/2026	शनि	22/01/2028	बुध	23/06/2029
शनि	21/11/2026	बुध	09/03/2028	केतु	25/07/2029
बुध	25/04/2027	केतु	28/03/2028	शुक्र	25/10/2029
केतु	28/06/2027	शुक्र	22/05/2028	सूर्य	21/11/2029

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
13/03/2025		17/02/2026		29/03/2027	
17/02/2026		29/03/2027		25/03/2028	
गुरु	27/04/2025	शनि	22/04/2026	बुध	19/05/2027
शनि	20/06/2025	बुध	18/06/2026	केतु	09/06/2027
बुध	08/08/2025	केतु	12/07/2026	शुक्र	08/08/2027
केतु	27/08/2025	शुक्र	17/09/2026	सूर्य	26/08/2027
शुक्र	23/10/2025	सूर्य	07/10/2026	चंद्र	26/09/2027
सूर्य	09/11/2025	चंद्र	10/11/2026	मंगल	17/10/2027
चंद्र	08/12/2025	मंगल	04/12/2026	राहु	10/12/2027
मंगल	28/12/2025	राहु	03/02/2027	गुरु	27/01/2028
राहु	17/02/2026	गुरु	29/03/2027	शनि	25/03/2028

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
21/11/2029		09/12/2030		27/01/2033	
09/12/2030		27/01/2033		10/08/2035	
मंगल	13/12/2029	गुरु	23/03/2031	शनि	22/06/2033
राहु	09/02/2030	शनि	25/07/2031	बुध	31/10/2033
गुरु	01/04/2030	बुध	12/11/2031	केतु	24/12/2033
शनि	01/06/2030	केतु	28/12/2031	शुक्र	27/05/2034
बुध	25/07/2030	शुक्र	05/05/2032	सूर्य	13/07/2034
केतु	16/08/2030	सूर्य	13/06/2032	चंद्र	28/09/2034
शुक्र	19/10/2030	चंद्र	17/08/2032	मंगल	21/11/2034
सूर्य	07/11/2030	मंगल	02/10/2032	राहु	09/04/2035
चंद्र	09/12/2030	राहु	27/01/2033	गुरु	10/08/2035

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
25/03/2028		21/08/2028		21/10/2029	
21/08/2028		21/10/2029		26/02/2030	
केतु	02/04/2028	शुक्र	31/10/2028	सूर्य	27/10/2029
शुक्र	27/04/2028	सूर्य	21/11/2028	चंद्र	07/11/2029
सूर्य	05/05/2028	चंद्र	27/12/2028	मंगल	15/11/2029
चंद्र	17/05/2028	मंगल	21/01/2029	राहु	04/12/2029
मंगल	26/05/2028	राहु	26/03/2029	गुरु	21/12/2029
राहु	17/06/2028	गुरु	21/05/2029	शनि	10/01/2030
गुरु	07/07/2028	शनि	28/07/2029	बुध	28/01/2030
शनि	31/07/2028	बुध	26/09/2029	केतु	05/02/2030
बुध	21/08/2028	केतु	21/10/2029	शुक्र	26/02/2030

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
10/08/2035		15/11/2037		22/10/2038	
15/11/2037		22/10/2038		22/06/2041	
बुध	05/12/2035	केतु	05/12/2037	शुक्र	02/04/2039
केतु	22/01/2036	शुक्र	31/01/2038	सूर्य	21/05/2039
शुक्र	08/06/2036	सूर्य	17/02/2038	चंद्र	10/08/2039
सूर्य	20/07/2036	चंद्र	17/03/2038	मंगल	06/10/2039
चंद्र	27/09/2036	मंगल	06/04/2038	राहु	29/02/2040
मंगल	14/11/2036	राहु	27/05/2038	गुरु	08/07/2040
राहु	18/03/2037	गुरु	11/07/2038	शनि	09/12/2040
गुरु	07/07/2037	शनि	03/09/2038	बुध	26/04/2041
शनि	15/11/2037	बुध	22/10/2038	केतु	22/06/2041

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
26/02/2030		27/09/2030		09/06/2033	
27/09/2030		09/06/2033		03/11/2035	
चंद्र	16/03/2030	राहु	22/02/2031	गुरु	04/10/2033
मंगल	28/03/2030	गुरु	03/07/2031	शनि	20/02/2034
राहु	29/04/2030	शनि	06/12/2031	बुध	24/06/2034
गुरु	27/05/2030	बुध	24/04/2032	केतु	14/08/2034
शनि	30/06/2030	केतु	21/06/2032	शुक्र	07/01/2035
बुध	30/07/2030	शुक्र	02/12/2032	सूर्य	20/02/2035
केतु	12/08/2030	सूर्य	20/01/2033	चंद्र	04/05/2035
शुक्र	16/09/2030	चंद्र	13/04/2033	मंगल	24/06/2035
सूर्य	27/09/2030	मंगल	09/06/2033	राहु	03/11/2035

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
22/06/2041		10/04/2042		10/08/2043	
10/04/2042		10/08/2043		16/07/2044	
सूर्य	06/07/2041	चंद्र	20/05/2042	मंगल	30/08/2043
चंद्र	31/07/2041	मंगल	18/06/2042	राहु	20/10/2043
मंगल	17/08/2041	राहु	30/08/2042	गुरु	04/12/2043
राहु	30/09/2041	गुरु	03/11/2042	शनि	27/01/2044
गुरु	08/11/2041	शनि	19/01/2043	बुध	16/03/2044
शनि	24/12/2041	बुध	29/03/2043	केतु	05/04/2044
बुध	03/02/2042	केतु	26/04/2043	शुक्र	31/05/2044
केतु	20/02/2042	शुक्र	17/07/2043	सूर्य	17/06/2044
शुक्र	10/04/2042	सूर्य	10/08/2043	चंद्र	16/07/2044

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
03/11/2035		09/09/2038		28/03/2041	
09/09/2038		28/03/2041		16/04/2042	
शनि	16/04/2036	बुध	19/01/2039	केतु	19/04/2041
बुध	10/09/2036	केतु	14/03/2039	शुक्र	22/06/2041
केतु	10/11/2036	शुक्र	16/08/2039	सूर्य	12/07/2041
शुक्र	02/05/2037	सूर्य	02/10/2039	चंद्र	12/08/2041
सूर्य	23/06/2037	चंद्र	18/12/2039	मंगल	04/09/2041
चंद्र	18/09/2037	मंगल	11/02/2040	राहु	31/10/2041
मंगल	18/11/2037	राहु	29/06/2040	गुरु	21/12/2041
राहु	23/04/2038	गुरु	01/11/2040	शनि	20/02/2042
गुरु	09/09/2038	शनि	28/03/2041	बुध	16/04/2042

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
16/07/2044		09/12/2046		12/12/2049	
09/12/2046		12/12/2049		21/08/2052	
राहु	24/11/2044	शनि	01/06/2047	बुध	30/04/2050
गुरु	21/03/2045	बुध	04/11/2047	केतु	27/06/2050
शनि	07/08/2045	केतु	07/01/2048	शुक्र	08/12/2050
बुध	09/12/2045	शुक्र	08/07/2048	सूर्य	26/01/2051
केतु	29/01/2046	सूर्य	01/09/2048	चंद्र	18/04/2051
शुक्र	24/06/2046	चंद्र	02/12/2048	मंगल	14/06/2051
सूर्य	07/08/2046	मंगल	04/02/2049	राहु	09/11/2051
चंद्र	19/10/2046	राहु	19/07/2049	गुरु	19/03/2052
मंगल	09/12/2046	गुरु	12/12/2049	शनि	21/08/2052

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
16/04/2042		15/04/2045		10/03/2046	
15/04/2045		10/03/2046		09/09/2047	
शुक्र	15/10/2042	सूर्य	02/05/2045	चंद्र	25/04/2046
सूर्य	09/12/2042	चंद्र	29/05/2045	मंगल	27/05/2046
चंद्र	10/03/2043	मंगल	17/06/2045	राहु	17/08/2046
मंगल	13/05/2043	राहु	06/08/2045	गुरु	29/10/2046
राहु	25/10/2043	गुरु	18/09/2045	शनि	24/01/2047
गुरु	19/03/2044	शनि	09/11/2045	बुध	11/04/2047
शनि	08/09/2044	बुध	26/12/2045	केतु	13/05/2047
बुध	10/02/2045	केतु	14/01/2046	शुक्र	13/08/2047
केतु	15/04/2045	शुक्र	10/03/2046	सूर्य	09/09/2047

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
21/08/2052		30/09/2053		30/11/2056	
30/09/2053		30/11/2056		12/11/2057	
केतु	14/09/2052	शुक्र	11/04/2054	सूर्य	17/12/2056
शुक्र	20/11/2052	सूर्य	08/06/2054	चंद्र	15/01/2057
सूर्य	11/12/2052	चंद्र	12/09/2054	मंगल	04/02/2057
चंद्र	13/01/2053	मंगल	19/11/2054	राहु	28/03/2057
मंगल	06/02/2053	राहु	11/05/2055	गुरु	14/05/2057
राहु	08/04/2053	गुरु	12/10/2055	शनि	08/07/2057
गुरु	01/06/2053	शनि	12/04/2056	बुध	26/08/2057
शनि	04/08/2053	बुध	23/09/2056	केतु	15/09/2057
बुध	30/09/2053	केतु	30/11/2056	शुक्र	12/11/2057

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
09/09/2047		26/09/2048		15/11/2050	
26/09/2048		15/11/2050		28/05/2053	
मंगल	01/10/2047	गुरु	08/01/2049	शनि	10/04/2051
राहु	28/11/2047	शनि	12/05/2049	बुध	19/08/2051
गुरु	18/01/2048	बुध	30/08/2049	केतु	12/10/2051
शनि	19/03/2048	केतु	15/10/2049	शुक्र	14/03/2052
बुध	12/05/2048	शुक्र	21/02/2050	सूर्य	30/04/2052
केतु	03/06/2048	सूर्य	01/04/2050	चंद्र	16/07/2052
शुक्र	06/08/2048	चंद्र	05/06/2050	मंगल	08/09/2052
सूर्य	25/08/2048	मंगल	21/07/2050	राहु	25/01/2053
चंद्र	26/09/2048	राहु	15/11/2050	गुरु	28/05/2053

योगिनी दशा

संकटा 7 वर्ष 7 मास 16 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
21/03/1990		05/11/1997		05/11/1998	
05/11/1997		05/11/1998		05/11/2000	
संक	17/08/1991	मंग	15/11/1997	पिंग	16/12/1998
मंग	06/11/1991	पिंग	06/12/1997	धांय	15/02/1999
पिंग	16/04/1992	धांय	05/01/1998	भ्राम	07/05/1999
धांय	16/12/1992	भ्राम	15/02/1998	भद्रि	17/08/1999
भ्राम	05/11/1993	भद्रि	06/04/1998	उल्क	16/12/1999
भद्रि	16/12/1994	उल्क	06/06/1998	सिद्ध	06/05/2000
उल्क	16/04/1996	सिद्ध	16/08/1998	संक	16/10/2000
सिद्ध	05/11/1997	संक	05/11/1998	मंग	05/11/2000

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
05/11/2000		06/11/2003		06/11/2007	
06/11/2003		06/11/2007		05/11/2012	
धांय	04/02/2001	भ्राम	16/04/2004	भद्रि	16/07/2008
भ्राम	06/06/2001	भद्रि	05/11/2004	उल्क	17/05/2009
भद्रि	05/11/2001	उल्क	06/07/2005	सिद्ध	07/05/2010
उल्क	07/05/2002	सिद्ध	17/04/2006	संक	17/06/2011
सिद्ध	06/12/2002	संक	07/03/2007	मंग	06/08/2011
संक	06/08/2003	मंग	17/04/2007	पिंग	16/11/2011
मंग	06/09/2003	पिंग	07/07/2007	धांय	16/04/2012
पिंग	06/11/2003	धांय	06/11/2007	भ्राम	05/11/2012

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
05/11/2012		05/11/2018		05/11/2025	
05/11/2018		05/11/2025		05/11/2033	
उल्क	05/11/2013	सिद्ध	17/03/2020	संक	17/08/2027
सिद्ध	05/01/2015	संक	06/10/2021	मंग	06/11/2027
संक	06/05/2016	मंग	16/12/2021	पिंग	16/04/2028
मंग	06/07/2016	पिंग	07/05/2022	धांय	16/12/2028
पिंग	05/11/2016	धांय	06/12/2022	भ्राम	05/11/2029
धांय	07/05/2017	भ्राम	16/09/2023	भद्रि	16/12/2030
भ्राम	05/01/2018	भद्रि	05/09/2024	उल्क	16/04/2032
भद्रि	05/11/2018	उल्क	05/11/2025	सिद्ध	05/11/2033

सिद्धा 2 वर्ष 4 मास 10 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
26/12/2000		08/05/2003		08/05/2011	
08/05/2003		08/05/2011		08/05/2012	
	00/00/0000	संक	16/02/2005	मंग	19/05/2011
	00/00/0000	मंग	08/05/2005	पिंग	08/06/2011
	00/00/0000	पिंग	17/10/2005	धांय	08/07/2011
	00/00/0000	धांय	18/06/2006	भ्राम	18/08/2011
	26/12/2000	भ्राम	08/05/2007	भद्रि	08/10/2011
भ्राम	18/03/2001	भद्रि	17/06/2008	उल्क	08/12/2011
भद्रि	08/03/2002	उल्क	17/10/2009	सिद्ध	17/02/2012
उल्क	08/05/2003	सिद्ध	08/05/2011	संक	08/05/2012

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
08/05/2012		08/05/2014		08/05/2017	
08/05/2014		08/05/2017		08/05/2021	
पिंग	17/06/2012	धांय	08/08/2014	भ्राम	17/10/2017
धांय	17/08/2012	भ्राम	07/12/2014	भद्रि	08/05/2018
भ्राम	06/11/2012	भद्रि	08/05/2015	उल्क	07/01/2019
भद्रि	16/02/2013	उल्क	07/11/2015	सिद्ध	18/10/2019
उल्क	18/06/2013	सिद्ध	07/06/2016	संक	06/09/2020
सिद्ध	07/11/2013	संक	06/02/2017	मंग	17/10/2020
संक	18/04/2014	मंग	08/03/2017	पिंग	06/01/2021
मंग	08/05/2014	पिंग	08/05/2017	धांय	08/05/2021

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
08/05/2021		08/05/2026		08/05/2032	
08/05/2026		08/05/2032		08/05/2039	
भद्रि	17/01/2022	उल्क	08/05/2027	सिद्ध	17/09/2033
उल्क	17/11/2022	सिद्ध	08/07/2028	संक	08/04/2035
सिद्ध	07/11/2023	संक	07/11/2029	मंग	18/06/2035
संक	17/12/2024	मंग	06/01/2030	पिंग	07/11/2035
मंग	06/02/2025	पिंग	08/05/2030	धांय	07/06/2036
पिंग	18/05/2025	धांय	07/11/2030	भ्राम	18/03/2037
धांय	17/10/2025	भ्राम	08/07/2031	भद्रि	08/03/2038
भ्राम	08/05/2026	भद्रि	08/05/2032	उल्क	08/05/2039

योगिनी दशा

संकटा 7 वर्ष 7 मास 16 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
05/11/2033		05/11/2034		05/11/2036	
05/11/2034		05/11/2036		06/11/2039	
मंग	15/11/2033	पिंग	16/12/2034	धांय	04/02/2037
पिंग	06/12/2033	धांय	15/02/2035	भ्राम	06/06/2037
धांय	05/01/2034	भ्राम	07/05/2035	भद्रि	05/11/2037
भ्राम	15/02/2034	भद्रि	17/08/2035	उल्क	07/05/2038
भद्रि	06/04/2034	उल्क	16/12/2035	सिद्ध	06/12/2038
उल्क	06/06/2034	सिद्ध	06/05/2036	संक	06/08/2039
सिद्ध	16/08/2034	संक	16/10/2036	मंग	06/09/2039
संक	05/11/2034	मंग	05/11/2036	पिंग	06/11/2039

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
06/11/2039		06/11/2043		05/11/2048	
06/11/2043		05/11/2048		05/11/2054	
भ्राम	16/04/2040	भद्रि	16/07/2044	उल्क	05/11/2049
भद्रि	05/11/2040	उल्क	17/05/2045	सिद्ध	05/01/2051
उल्क	06/07/2041	सिद्ध	07/05/2046	संक	06/05/2052
सिद्ध	17/04/2042	संक	17/06/2047	मंग	06/07/2052
संक	07/03/2043	मंग	06/08/2047	पिंग	05/11/2052
मंग	17/04/2043	पिंग	16/11/2047	धांय	07/05/2053
पिंग	07/07/2043	धांय	16/04/2048	भ्राम	05/01/2054
धांय	06/11/2043	भ्राम	05/11/2048	भद्रि	05/11/2054

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
05/11/2054		05/11/2061		05/11/2069	
05/11/2061		05/11/2069		05/11/2070	
सिद्ध	17/03/2056	संक	17/08/2063	मंग	15/11/2069
संक	06/10/2057	मंग	06/11/2063	पिंग	06/12/2069
मंग	16/12/2057	पिंग	16/04/2064	धांय	05/01/2070
पिंग	07/05/2058	धांय	16/12/2064	भ्राम	15/02/2070
धांय	06/12/2058	भ्राम	05/11/2065	भद्रि	06/04/2070
भ्राम	16/09/2059	भद्रि	16/12/2066	उल्क	06/06/2070
भद्रि	05/09/2060	उल्क	16/04/2068	सिद्ध	16/08/2070
उल्क	05/11/2061	सिद्ध	05/11/2069	संक	05/11/2070

सिद्धा 2 वर्ष 4 मास 10 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
08/05/2039		08/05/2047		08/05/2048	
08/05/2047		08/05/2048		08/05/2050	
संक	16/02/2041	मंग	19/05/2047	पिंग	17/06/2048
मंग	08/05/2041	पिंग	08/06/2047	धांय	17/08/2048
पिंग	17/10/2041	धांय	08/07/2047	भ्राम	06/11/2048
धांय	18/06/2042	भ्राम	18/08/2047	भद्रि	16/02/2049
भ्राम	08/05/2043	भद्रि	08/10/2047	उल्क	18/06/2049
भद्रि	17/06/2044	उल्क	08/12/2047	सिद्ध	07/11/2049
उल्क	17/10/2045	सिद्ध	17/02/2048	संक	18/04/2050
सिद्ध	08/05/2047	संक	08/05/2048	मंग	08/05/2050

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
08/05/2050		08/05/2053		08/05/2057	
08/05/2053		08/05/2057		08/05/2062	
धांय	08/08/2050	भ्राम	17/10/2053	भद्रि	17/01/2058
भ्राम	07/12/2050	भद्रि	08/05/2054	उल्क	17/11/2058
भद्रि	08/05/2051	उल्क	07/01/2055	सिद्ध	07/11/2059
उल्क	07/11/2051	सिद्ध	18/10/2055	संक	17/12/2060
सिद्ध	07/06/2052	संक	06/09/2056	मंग	06/02/2061
संक	06/02/2053	मंग	17/10/2056	पिंग	18/05/2061
मंग	08/03/2053	पिंग	06/01/2057	धांय	17/10/2061
पिंग	08/05/2053	धांय	08/05/2057	भ्राम	08/05/2062

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
08/05/2062		08/05/2068		08/05/2075	
08/05/2068		08/05/2075		08/05/2083	
उल्क	08/05/2063	सिद्ध	17/09/2069	संक	16/02/2077
सिद्ध	08/07/2064	संक	08/04/2071	मंग	08/05/2077
संक	07/11/2065	मंग	18/06/2071	पिंग	17/10/2077
मंग	06/01/2066	पिंग	07/11/2071	धांय	18/06/2078
पिंग	08/05/2066	धांय	07/06/2072	भ्राम	08/05/2079
धांय	07/11/2066	भ्राम	18/03/2073	भद्रि	17/06/2080
भ्राम	08/07/2067	भद्रि	08/03/2074	उल्क	17/10/2081
भद्रि	08/05/2068	उल्क	08/05/2075	सिद्ध	08/05/2083

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

3	मूलांक	8
7	भाग्यांक	4
3, 5, 7, 9	मित्र अंक	1, 2, 8, 4
1, 4, 8	शत्रु अंक	3, 7, 9
21,30,39,48,57	शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
मंगल, सोम, गुरु	शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
मंगल, चन्द्र, गुरु	शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मीन, सिंह	मित्र राशि	मीन, सिंह
तुला, मीन, वृष	मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
हनुमान	अनुकूल देवता	हनुमान
मोती	शुभ रत्न	माणिक्य
चन्द्रमणि	शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
पुखराज	भाग्य रत्न	मूंगा
रजत	शुभ धातु	ताम्र
श्वेत	शुभ रंग	नारंगी
पश्चिमोत्तर	शुभ दिशा	पूर्व
संध्या	शुभ समय	सूर्योदय
शंख, कपूर, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
चावल	दान अन्न	गेहुँ
दही	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

parth pawar

जीवन रत्नः	मोती	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पुखराज	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख

Kainath

जीवन रत्नः	माणिक्य	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	पराक्रम, भाग्योदय, सुख
कारक रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
शुभ उपरत्नः	पन्ना	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
	गोमेद	धनार्जन, सन्तति सुख
	लहसुनिया	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	--- --
साढेसाती तृतीय ढैया	20/03/1990-06/03/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/03/2084-11/05/2086

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सन्तति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

parth pawar

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रूकावटें आती है। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।

7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Kainath

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शक्ति का प्रायः ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की सम्भावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाईयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा झंझट हो जाता है। बड़े भाई से भी किसी समय थोड़ा बहुत विवाद हो जाता है।

इस योग के कारण जातक अपने स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है पर कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति किसी समय चिन्तातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या थोड़ा बहुत संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हस्तगत नहीं होता। सन्तान पक्ष से थोड़ा बहुत परेशानी घेरे रहती है तथा जातक को अपने शरीर में भी रोग व्याधि लग जाती है और उससे कष्ट उठाना पड़ता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है तथा जीवन का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।

5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	नकुल	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	34.00		

कुल : **34 / 36**

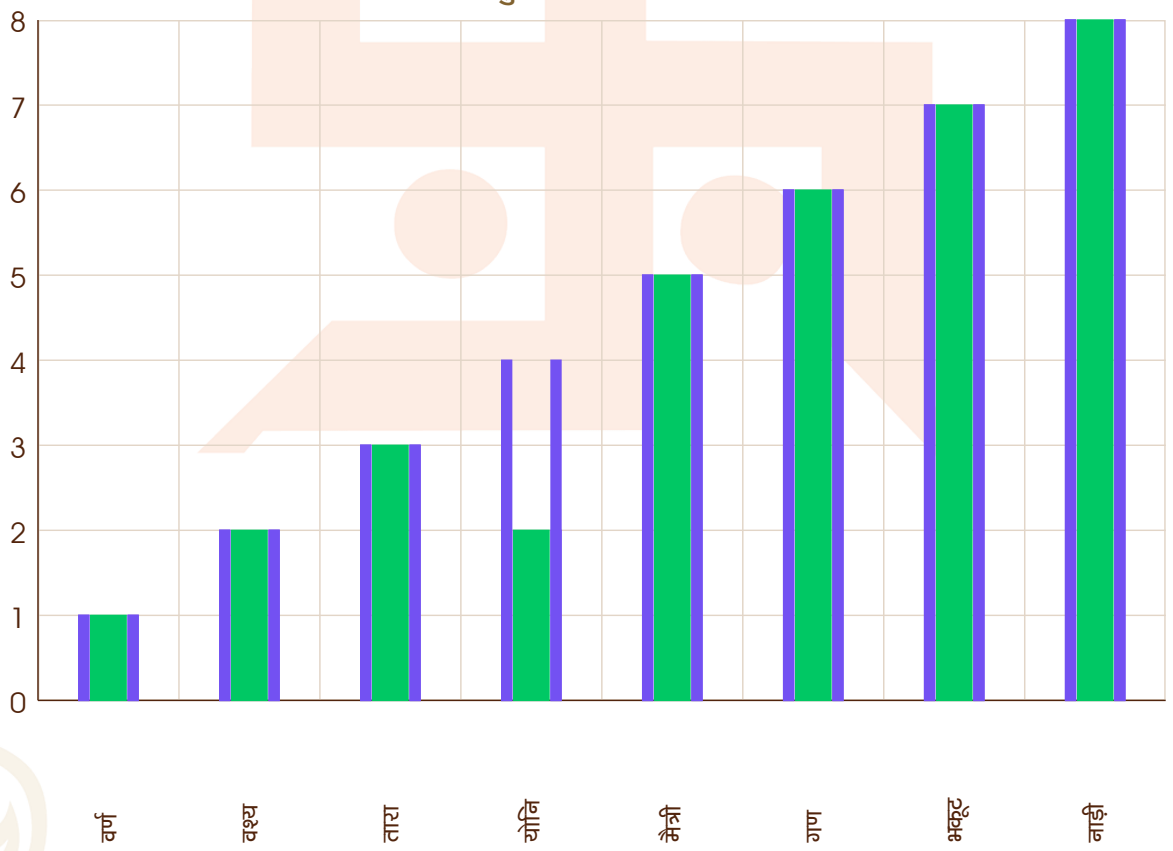

अष्टकूट मिलान

इस मिलान में नक्षत्र दोष भी विधमान है।

parth pawar का वर्ग मूषक है तथा Kainath का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार parth pawar और Kainath का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

parth pawar मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में सप्तम भाव में मकर राशि में तथा अष्टम भाव में मीन राशि में मंगल हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल parth pawar कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मकर राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल parth pawar कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु parth pawar कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Kainath मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Kainath कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

parth pawar तथा Kainath में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

parth pawar का वर्ण क्षत्रिय तथा Kainath का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

parth pawar का वश्य चतुष्पद है एवं Kainath का वश्य भी चतुष्पद है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप parth pawar एवं Kainath दोनों के स्वभाव, पसंद एक समान होंगे तथा आपसी तालमेल काफी अच्छा रहेगा, जिससे परिवार में सुख, शांति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता रहेगा। दोनों के बीच अत्यधिक प्रेम की भावना भी बनी रहेगी।

तारा

parth pawar की तारा सम्पत तथा Kainath की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से parth pawar एवं Kainath दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। Kainath एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

parth pawar की योनि नकुल है तथा Kainath की योनि वानर है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी

अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में parth pawar एवं Kainath दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि parth pawar एवं Kainath दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

parth pawar का गण मनुष्य तथा Kainath का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

parth pawar एवं Kainath दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान parth pawar एवं Kainath तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

parth pawar की नाड़ी अन्त्य है तथा Kainath की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

parth pawar और Kainath की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त धनु राशि है। अतः इसके प्रभाव से parth pawar और Kainath के मध्य स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी तथा परस्पर संबंधों में भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

parth pawar और Kainath की राशि का स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा सच्चे मित्र की तरह एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति हार्दिक प्रेम, सहानुभूति तथा समर्पण का भाव विद्यमान रहेगा एवं सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करेंगे। ऐसा करने से parth pawar और Kainath का वैवाहिक जीवन सुख एवं शांति पूर्ण व्यतीत होगा तथा मधुर स्मृतियों तथा क्षणों की हृदय से आनंद उठाएंगे।

parth pawar और Kainath की राशियां परस्पर प्रथम प्रथम - भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके शुभ प्रभाव से parth pawar और Kainath भाग्यशाली सिद्ध होंगे तथा जीवन में इच्छित सुखऐश्वर्य एवं संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। उनकी परस्पर सामंजस्य की प्रवृति भी होगी तथा एक दूसरे के अस्तित्व एवं स्वतंत्रता का हार्दिक सम्मान करेंगे जिससे parth pawar और Kainath का दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही शुभ रहेगा तथा शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

parth pawar और Kainath दोनों का वश्य चतुष्पद है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक संबंधों में भी समता रहेगी फलतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं काम संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने में समर्थ होंगे जिससे आंतरिक प्रसन्नता भी बनी रहेगी।

parth pawar एवं Kainath दोनों का वर्ण क्षत्रिय है। अतः दोनों की कार्य क्षमता बराबर होगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यो को करने में दोनों रूचिशील रहेंगे अतः कार्य क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

parth pawar की तारा सम्पत तथा Kainath की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से parth pawar सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा Kainath के भाग्य से उनकी धन सम्पति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

parth pawar और Kainath को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से Kainath का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

parth pawar की नाड़ी अन्त्य तथा Kainath की नाड़ी मध्य है। अतः नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका इनके स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा परन्तु मंगल का Kainath के स्वास्थ्य पर विशेष अशुभ प्रभाव रहेगा। इससे वे रक्त या पित संबधी परेशानियां प्राप्त करेंगी तथा गुप्त या धातु संबधी रोगों का भी उन्हें सामना करना पड़ सकता है। साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी कष्ट की अनुभूति करेंगी। अतः इन प्रभावों में न्यूनता लाने के लिए Kainath को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से parth pawar और Kainath का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही इनके कन्या एवं पुत्र संततियों की संख्या समान होगी तथा जन्म समय का अंतर भी अनुकूल रहेगा फलतः उनका उचित पालन पोषण एवं अन्य कार्य करने में वे समर्थ होंगे।

लेकिन Kainath को गर्भपात संबधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है अतः इसके लिए अतिरिक्त सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ेगा। साथ ही समय समय पर नियमित रूप से डाक्टरी परीक्षण भी करवाने चाहिए। यदि इन बातों का Kainath पूर्ण रूप से ध्यान रखें तो उपरोक्त समस्या में न्यूनता आ सकती है। लेकिन गर्भपात के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार की प्रसूति चिकित्सा आदि का सामना नहीं करना पड़ेगा तथा सुदंर एवं स्वस्थ बच्चों को जन्म देने में Kainath समर्थ रहेंगी।

parth pawar और Kainath अपनी संतति से पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा बच्चे भी अपनी बुद्धिमता योग्यता तथा व्यवहार कुशलता से अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। यद्यपि बच्चे माता पिता के प्रति पूर्ण आदर तथा आज्ञा पालन का भाव रखेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे परन्तु पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहेंगे। इस प्रकार parth pawar और Kainath का पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

Kainath के अपने सास से सामान्य संबध रहेंगे तथा परस्पर सामंजस्य से मधुरता बनी रहेगी यद्यपि इनके मध्य यदा कदा विवाद या मतभेद उत्पन्न होंगे परन्तु उनका बुद्धिमता से समाधान करने में दोनों को सफलता प्राप्त होगी। साथ ही Kainath यत्नपूर्वक सास की सुख

सुविधाओं का ध्यान रखकर उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी।

लेकिन ससुर से पूर्ण स्नेह एवं सहानुभूति अर्जित करने में Kainath को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथा उनकी तरफ से समय समय पर समस्याएं उत्पन्न होगी। परन्तु ननद एवं देवरों से संबधों में मधुरता रहेगी तथा उनका व्यवहार मित्रवत रहेगा फलतः उनसे पूर्ण स्नेह एवं सहानुभूति प्राप्त होगी।

इस प्रकार Kainath को ससुराल में सामान्य रूप से अनुकूल वातावरण मिलेगा तथा किंचित असुविधाओं का सामना करके वह सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सकेंगी।

ससुराल-श्री

parth pawar के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को parth pawar अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी parth pawar के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण parth pawar के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

parth pawar

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विद्वान व्यक्ति कहलायेंगे। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगे। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चले जायेंगे। आप एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगे कि वह भी अनुशासन में रहें । आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति होंगे। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगे। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगे और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगे।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन-पाठन, भाषण, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगे एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

Kainath

आपका जन्म दिनांक 26 है। दो और छः के योग से आपका मूलांक आठ होता है। मूलांक 8 का स्वामी शनि ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक छः का शुक्र है। अतः आपके जीवन में अंक दो, छः एवं आठ के स्वामी ग्रह चन्द्र, शुक्र एवं शनि का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

मूलांक 8 के स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके प्रत्येक कार्य में रुकावटें अवश्य आयेंगी। लेकिन आप इनसे बिना विचलित हुए अपनी सफलता का मार्ग स्वयं के कठिन परिश्रम तथा बुद्धि विवेक एवं ज्ञान के द्वारा प्राप्त करेंगी। आलस्य आपके अन्दर अवगुण के रूप में रहेगा। इसी कारण कई बार आप सफलता प्राप्त करते-करते ऐसी चूक कर देंगी जिसका बाद में पछतावा होगा। शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपने जीवन मे कई महत्वपूर्ण एवं स्थायी उपलब्धियां अर्जित करेंगी। जिससे आपका सामाजिक स्तर ऊँचा होगा और आपको समाज में नाम, यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी। आपके कार्य करने का ढ़ंग कुछ इस प्रकार का रहेगा कि आप अपने विरोधी, आलोचक स्वयं तैयार करेंगी।

आप दिखावा पसन्द नहीं करेंगी। इससे आपको रूखा, शुष्क एवं कठोर हृदय

महिला समझा जायेगा। जबकि आप अन्दर से भावुक एवं दयालु हृदय की होंगी। आपकी रुचि अपने काम तक ही सीमित रहेगी एवं कठिन से कठिन कार्य को भी आप अंजाम देने की क्षमता रखेंगी। इससे आपके सहयोगी आपके आलोचक बन जायेंगे। आप श्रमशील, त्यागी महिला के रूप में जानी जायेंगी एवं आपकी प्रगति में आने वाली रुकावटों को आप आपनी इच्छा शक्ति के बलबूते पर दूर करने में सफल रहेंगी।

अंक दो का स्वामी चन्द्र आपको विभिन्न क्षेत्रों में असफलता देगा लेकिन अंक छः का स्वामी शुक्र आपके अन्दर कलात्मक भाव की वृद्धि करेगा जो कि आपकी कार्य शैली में दृष्टिगोचर होगा।

parth pawar

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

Kainath

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

parth pawar

आपका जन्म पुष्यनक्षत्र के चतुर्थ चरण में कर्क लग्नोदय काल हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर कर्क लग्न के साथ-साथ वृश्चिक राशि का नवमांश एवं वृश्चिक राशि में ही द्रेष्काण उदित था। आपके जन्म प्रभाव से यह संकेत प्राप्त होता है कि आपका जीवन उज्जवल एवं फलदायक है। परन्तु आपके स्वास्थ्य से सम्बंधित कतिपय सतर्कतापूर्ण निर्देश प्राप्त होते हैं।

प्रायः कर्क राशीय प्रभाव से आप शारीरिक रूप से बाल्यावस्था में सुकुमार रहेंगे। बल्कि आयु वृद्धि के साथ-साथ आपकी शारीरिक अभिवृद्धि भी होगी तथा शारीरिक स्थिति में सुधार संभव है। तथापि वृश्चिक नवमांश के प्रभाव से आप दुःसाहसिक कदम उठाएंगे। फलस्वरूप आप कतिपय रोगों से आक्रान्त हो सकते हैं। उत्तम तो यह है कि आप पाचन क्रिया के कारण कुष्ठ रोगादि उत्पन्न होने के पूर्व ही सतर्कता अपनाना ठीक है। आपको सतत ही सन्धिवात अर्थात् गाँठ के दर्द (गठिया) वाय, अलसर, गौस्टिक रोग एवं नितम्ब बेदना रोग उत्पन्न होने के प्रति रक्षित रहें। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ हेतु नियमितता बनाए रखें तथा अधिक भोजन करने की आदत नियंत्रण रखें।

अकारण मद्यपान की निवृति की अनुशंसा करे। अर्थात् त्याग करें।

आप बहुत धनोपार्जन करेंगे तथा आपके पास धन कोष पर्याप्त रहेगा। यह सुनिश्चित है, जबकि आप एकाग्रचित होकर स्वतः अपने कार्य उद्देश्य के सफलता की प्राप्ति हेतु दृढ़तापूर्वक प्रयासरत रहें। आपके जीवन का भाग्यशाली समय 36 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। आप अपनी अति अभिलाषा पर नियंत्रण रखें तथा अपने उद्देश्य को कार्यरूप दें। आप में ऐसा गुण विद्यमान है कि आप विश्वसनीयता पूर्वक कार्य सम्पादन करेंगे। आप मंत्रि पद एवं उच्च कार्यकारी पदाधिकारी पद पर आसीन हो सकते हैं। बशर्ते कि विश्वास पूर्वक अपनी प्रतिष्ठा को सम्मान जनक बना सके। आपके लिए व्यवसाय जल से सम्बंधित कार्य है। यथा तटबन्ध, नहर-सिचाई, कृषि एवं जहाजरानी सम्बंधी कार्य अनुकूल होंगे।

आप जनसामान्य हेतु ज्योतिषीय कार्य अर्थात् भविष्यवक्ता, शिक्षण कार्य आदि आध्यात्मिक व्यवस्था को पसन्द करते हैं। क्योंकि आपने विश्वसनीयता पूर्वक आध्यात्मिक ज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपकी उच्चाकांक्षा है कि आप दर्शनीय तीर्थस्थानों का भ्रमण कर, लोक कल्याणकारी कार्य प्रस्तुत करेगें। आपमें यह गुण विद्यमान है कि बहुसंख्यक प्राणी आपकी विश्वसनीयतापूर्ण आध्यात्मिक समर्पण की प्रशंसा करेंगे। आप विश्वसनीयता को प्राथमिकता देकर प्रशंसित व्यवसाय करेंगे तथा सदैव आपका व्यवहार जनसाधारण द्वारा प्रशंसित रहेगा।

आप उच्च कोटि के भावुक प्राणी है। आप अपने परिवार के साथ पूर्णतः सम्बंधित रहेगे। आप अपनी पत्नी के पूर्ण स्नेह प्रदान करने के लिए तत्पर रहकर अपने पारिवारिक सदस्यों की उन्नति और सुधार के लिए त्याग करेंगे। तथापि आप अपनी आश्चर्यजनक

उत्तेजनात्मक प्रवृति को नियंत्रित करने के अभ्यास का आचरण करें। इसमें सन्देह नहीं कि आप सदैव शान्त रहते हैं, तथापि शीघ्रतापूर्वक पुनः समत्वबुद्धि (धैर्य) धारण कर लेते है। परन्तु इस प्रवृति का दृश्यान्त आंशिक हानिप्रद होता है। अतः आप इस बेसुधपना को अनिवार्य रूप से शान्ति पूर्ण बना लें तथा निश्चितता पूर्वक विश्राम ग्रहण करें।

आप अपने स्तर के बहुसंख्यक मित्र अपनी यात्रा क्रम में बनाएंगे। आपकी अभिलाषा है कि आपका मित्रतापूर्ण संबंध शुभकांक्षाओं से युक्त एवं विश्वास जनक हो। आप अपने मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद युक्त आनन्द एवं प्रीति मिलन मुक्तहस्त से अपने आवास पर उदारतापूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

आपके लिए अंक, 4 एवं 6 अंक भाग्यशाली प्रमाणित होगा एवं अंक 3 एवं 5 अंक अनुपयुक्त है। आपके लिए रंग ब्लू एवं हरा रंग उपयुक्त नहीं अस्तु आपके लिए लाल, पीला, सफेद एवं क्रीम रंग फलदायक प्रतीत होता है।

Kainath

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में सिंह लग्नोदय काल में हुआ था। साथ ही कन्या नवमांश एवं धनु राशि के द्रेष्काण द्वारा एक शुभ आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भारत स्थित शहरी क्षेत्र के निवासियों के समान जो कार्य काल बसों की प्रतीक्षा और दौड़-धूप कर अपने कार्य पर पहुंचते है। उस प्रकार की दिक्कतें का सामना आपको नहीं करना होगा। अर्थात् जन्म के शुभ लक्षण से यह प्रतीत हो रहा है कि आपको जन्म से ही वाहन सुख प्राप्त होगा।

आपको कही भी यात्रा क्रम में सार्वजनिक यातायात के लिए गाड़ी बस ट्रान्सपोर्ट आदि प्रकार की सुविधा हेतु बिना संघर्ष के ही आपकी यात्रा के पथ प्रशस्त होंगे। कही भी बस आदि से यात्रा हेतु कतार में लगकर अपने समय का अपव्यय नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी यात्रा हेतु अपने पास कार-बस आदि उपलब्ध होने का लाभ एवं आनन्द प्राप्त करने का वरदान प्राप्त है। वास्तविकता तो यह है कि आपको अपने स्वयं के पास वाहनों की सुविधा युक्त समर्थ होने का सौभाग्य प्राप्त है।

आपका जीवन उत्तम प्रकार के वाहन सुखों से युक्त, आरामदायक एवं आनन्द से परिपूर्ण रहेगा। आप अपार धन, सम्पति से युक्त कुशाग्र बुद्धि की विद्वान एवं अनेक कलाओं में प्रवीण होंगी। आप सर्वोत्तम प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आप निम्नरूपेण उच्च श्रेणी की सेवा एवं कर्म से संबंधित रहेंगी। जो आपके लिए उपयुक्त एवं लाभप्रद प्रमाणित होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सतत कठिन श्रम करने वाली, उपव्यवसाय की खोज में लगे रहने वाली, दृढ़निश्चयी एवं प्रभावशाली प्राणी होंगी। आप सदा-सर्वदा कार्य विन्दु को निर्धारित

समय से पूर्व संपन्न करने के पहले ही अन्य कार्य को हस्तगत करने की इच्छुक रहेंगी तथा आप निश्चित रूप से अपने अनुबंध में सफलता प्राप्त करेंगी।

आप भ्रमणप्रिय हैं। आप अपना अधिक समय घर से बाहर अन्यत्र बिताएंगी। किसी प्रकार विवश होकर कुछ समय अपने प्रिय परिवार के लिए बचाकर उनके साथ बिताएंगी। आप अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से सभी कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक संपन्न कर लेंगी।

आपकी मित्र मण्डली बड़ी होगी। आपके मित्र आपको सहानुभूति पूर्वक मान-प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। आप अपने रास्ते से चलेंगी-वे मित्रगण आपका सहयोग करेंगे। मित्रगण आपका उच्चस्तरीय मूल्यांकन कर अपनी दिशा मोड़कर आपकी पंक्ति में खड़े होंगे अर्थात् आपको साथ देंगे।

आप मात्र अपने कर्म व्यवसाय से ही नहीं अच्छे लाभ प्राप्त करेंगी। आप तो सदैव भाग्यशाली समय अर्थात् मौके की तलाश में रहकर अपने भाग्य को दाव पर लगाकर लाभ प्राप्त करेंगी। इसका यह अर्थ नहीं कि आप सदैव ही जुआ खेलकर अपनी भाग्योन्नति हेतु प्रयास करेंगी। परन्तु आप यदा-कदा पाशे फेंक कर अपने इस कर्म को लाभदायक प्रमाणित कर सकती है।

आपकी महत्वपूर्ण आय प्रर्याप्त है, इसमें किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। आप बहुत धन संचय करने में समर्थ नहीं हैं क्योंकि आप जन सामान्य की नजरों में यह प्रदर्शित करेंगी कि आप अपने परिवार को एक धनाढ्य महिला की तरह भरण पोषण करती हैं। आप सदैव अपनी आय का कुछ अंश अपने घर में व्यय करेंगी।

यद्यपि आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तथापि बाद में कतिपय रोगादि के प्रति आपको थोड़ी सतर्कता बरतना आवश्यक है। क्योंकि आपका कार्यक्रम व्यस्ततम रहता है तथा लम्बे समय तक कार्यरत रहेंगी।

आपकी यह कार्यतंत्रियाँ अधिक समय तक कार्यरत रहने के लिए सक्षम नहीं भी हो सकती है। फलस्वरूप आपके हृदय पर एवं रीढ़ की हड्डियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतएव आपको इस व्यस्ततम कार्यक्रम का प्रतिकार कर शान्तिपूर्वक विश्राम ग्रहण करना चाहिए।

आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन पर अनुकूल प्रभाव हेतु पूर्णिमा का व्रत रखना अच्छा होगा। इससे आपको विभिन्न प्रकार का अति सहयोग प्राप्त होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

परन्तु आपको सोमवार एवं शनिवार के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि ये दोनों दिन आपके लिए अनुकूल नहीं है।

आपके लिए अनुकूल एवं प्रदोल्लित करने वाले अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक है। परन्तु अंक 2, 7 एवं 8 अंक आपके लिए प्रतिकूल हैं।

आपके लिए अनुकूल रंग नारंगी, लाल एवं हरा रंग है। रंग नीला, सफेद एवं काला रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

parth pawar

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय,योनि नकुल, नाड़ी अन्त्य गण मनुष्य तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भे" या "भै" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

समाज में आप एक गणमान्य व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मुख्य रूप से सात्विक गुणों से सम्पन्न रहेंगे। आप अपने कठिन से कठिन कार्य या समस्या को शांताचित्त से समाधान करने के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे। जीवन में नाना प्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। धन से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन में इसका आपके पास कम ही अभाव रहेगा। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कार्यो में पारंगत होने के कारण आप समाज में एक विद्वान के रूप में ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित कर सकेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

आप स्वभाव से ही विनम्र होंगे तथा सभी लोग आपकी विनयशीलता से प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेगी तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का आप नियमपूर्वक अनुपालन करने मे प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आपमें कृतज्ञता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोक प्रिय रहेंगे तथा उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने में सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

आपकी शारीरिक आकृति स्थूल तथा कद सामान्य रहेगा। साथ ही आप एक शूरवीर एवं साहसी व्यक्ति होंगे। तथा अपने अधिकाँश कार्यो को साहस पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त विवाद आदि में आप शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सर्वदा सफल रहेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

आपके मन में दान शीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी। तथा हृदय में दया एवं करूणा का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अच्छे कार्यो को ही सम्पन्न करेंगे। जिससे समाज में अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे। साथ ही आप एक प्रभुता सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप स्त्री तथा पुत्र आदि के सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा। परन्तु कभी कभी आप अभिमान का प्रदर्शन भी लोगों के समक्ष करेंगे। जिससे लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट भी रहेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

Kainath

आप पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि वानर, गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्य ाक्षर "फ" या "फा" से प्रारम्भ होगा यथा- फतेहसिंह।

आप जीवन में सर्व सुखों से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। समाज में अन्य लोगों के साथ में आपका व्यवहार अत्यन्त ही शिष्ट तथा मधुरता पूर्ण रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी प्रिय तथा मधुर रहेगी तथा अन्य लोगों को अपनी वाणी द्वारा प्रसन्न रखने में सक्षम रहेंगी। आप एक साहसी तथा सदाचारी महिला होंगी तथा आपका सदाचार अन्य जनों के लिए अनुकरणीय रहेगा। साथ ही धनऐश्वर्य से भी आप युक्त होंगी तथा जीवन में इनका अभाव महसूस नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा भी करती रहेंगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

आप पति के रूप में एक बुद्धिमान तथा गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी जो आपको जीवन में पूर्ण सुख तथा आनन्द प्रदान कराने में सफल होगा। इससे आपका सांसारिक जीवन सर्वदा आनन्दमय रहेगा। आपके मन में सामाजिक मतभेद की भावना नहीं रहेगी तथा सामान्य रूप से सभी वर्गो के हितों के लिए कार्यरत रहेंगी तथा इससे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। तथा इनके मध्य आप लोकप्रियता को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी से भी स्थिर मित्रता करने की इच्छा करेंगी। इससे आपके मित्र अल्प सख्या में होंगे परन्तु ये सभी गुणवान तथा बुद्धिमान रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार के द्रव्यों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा उनका उपभोग

भी करेंगी।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

आपके मन में परोपकार की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी। अतः स्वजनों के अतिरिक्त कोई अपरिचित जन भी यदि आपसे कुछ याचना करेगा तो आप प्रसन्नता पूर्वक उसकी यथा शक्ति सहायता करेंगी। अपने इस प्रकार के कार्यों से समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी। आप एक भाग्य शाली महिला भी होंगी तथा जीवन के अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प परिश्रम से ही सफल सिद्ध करने में सक्षम रहेंगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र रहेगी तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको ज्ञान रहेगा। अतः समाज में एक विदुषी के रूप में भी आप आदरणीया रहेंगी।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

आप प्रारम्भ से ही एक विनम्र तथा सुशील महिला होंगी तथा समस्त स्त्रियोचित सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही जीवन में सर्व प्रकार के भौतिक सुखसाधनों तथा ऐश्वर्य से सुशोभित रह कर उसका उपभोग करने वाली होंगी। आप स्वभाव से शान्त तथा सहनशीलता के गुण से भी युक्त रहेंगी तथा विषमपरिस्थितियों में भी इस गुण का पालन करते हुए उचित समाधान करने में सर्वत्र सफलता प्राप्त करेंगी।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

parth pawar

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा गला दीर्घ रहेगा। तथा ओंठ, दान्त एवं कानों में स्थूलता रहेगी। एवं भुजाएं मजबूत तथा मांसल रहेंगी। आप अपने पैतृक धन से सुसम्पन्न रहेंगे। तथा आजीवन सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आपके मन में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा जीवन में समयानुसार आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। लेखन कार्य में भी आप रूचिशील रहेंगे। तथा समय समय पर कविता सृजन आदि में सफलता तथा ख्याति प्राप्त करते रहेंगे। आपका शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा तथा अन्य लोग आपके बल से प्रभावित रहेंगे। आप एक उच्च कोटि के कुशल वक्ता होंगे। तथा अपने प्रभावशाली वक्तव्यों तथा कार्यों से अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकेंगे। समाज में सभी के प्रति मन में आपके हार्दिक सम्मान रहेगा। चित्रकला के प्रति आपमें विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वरूप भी गम्भीरता से युक्त रहेगा तथा अधिकांश कार्य भी गम्भीरता से ही सम्पन्न होंगे। धर्म में भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में इसका ज्ञानार्जन भी करेंगे। आपके अपने भाईयों से सामान्य संबंध रहेंगे। आप स्नेह तथा समानता के व्यवहार से ही वश में रहेंगे। किसी अन्य दवाब में आपसे कोई भी कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। न हीं आप किसी कार्य को करने के लिए तैयार होंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखे गोल तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगी तथा हाथ एवं कन्धों की लम्बाई भी कुछ अधिक ही रहेगी। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता है। पानी के नजदीक निवास करना या भ्रमण आदि करने में आप रूचिशील रहेंगे। एवं ऐसे अवसरों को प्राप्त करने के लिए भी आप प्रयत्न शील रहेंगे। आप गूढ़ से गूढ़ विषय का ज्ञान प्राप्त करके उसे हृदयगम करने में भी सफल रहेंगे। आप प्रायः प्रसन्नचिन्त ही रहेंगे एवं अनावश्यक चिन्ता या दुख मन में नहीं रखेंगे। आपकी शरीर की अस्थियां भी मजबूत होंगी। साथ ही कृतज्ञता के भाव से भी आप सुशोभित रहेंगे। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे। तथा हार्दिक रूप से उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।

बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी व्यक्ति होंगे तथा नित्य किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप सक्रिय रहेंगे तथा आराम से नहीं बैठ सकेंगे। आप बोलने में अत्यन्त ही प्रवीण होंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। त्याग की भावना का भी आप में नैसर्गिक समावेश रहेगा। तथा आवश्यकतानुसार इस प्रवृति का आप अनुपालन करेंगे। साथ ही आप एक साहसी पुरूष भी होंगे। तथा अधिकतर सांसारिक समस्याओं का साहसपूर्वक समाधान करेंगे। आपके शत्रु भी आपसे हमेशा पराजित रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकार प्राप्तवर्ग तथा सम्पन्न लोंगों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी सक्षम रहेंगे तथा स्वभाव से ही विनम्र एवं सुशील रहेंगे। आप एक चरित्रवान पुरूष होंगे जो अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय रहेगा। आप स्पष्ट बोलने में विश्वास करेंगे। अतः सभी लोग आपकी स्पष्टवादिता से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए खूब सोचविचार कर व्यय करेंगे। जिससे अनावश्यक आर्थिक संकट उत्पन्न न हो सके।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके समस्त शारीरिक अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ माने जाएंगे। तथा सभी परिवारिक जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकला एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी। इसके अनुपालन के लिए आप हमेशा जीवन में प्रयत्न शील रहेंगे। इसके साथ ही आपका स्वभाव शान्त होगा। तथा अन्य किसी के प्रति आप के मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक सुशील गुणवती एवं बुद्धिमती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे तथा समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति भी करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी। जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका शरीर स्थूल भी होगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रहकर समाज में आदरणीय रहेंगे। तथा सभी वर्गों के मध्य लोकप्रियता भी प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों से श्रेष्ठ समझे जाएंगे। आप धार्मिक प्रवृति से भी युक्त रहेंगे अतः देवता ब्राहमण एवं गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आप अत्यन्त ही सुमधुर गति से गमन करेंगे। परन्तु सहनशीलता का अभाव होने के कारण कई बार अनावश्यक समस्याओं को उत्पन्न करेंगे एवं परेशानी की अनुभूति भी करेंगे।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी, तिथियां भरणी नक्षत्र वज्रयोग तैतिल करण शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3, 8, 13 तिथियों भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिल करण में कोई में कोई भी शुभ कार्य न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा एवं मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक चिन्ताऐं शारीरिक परेशानी व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा शुभ कार्यों के सिद्ध होने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा मंगल एवं वृहस्पति के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र को किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा एवं शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

धनु राशि में जन्म लेने के कारण आपका गला एवं मुखभाग दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आपके कान, ओंठ, दान्त भी स्थूल रहेंगे। तथा भुजाएं पुष्ट रहेंगी। आप को अपने पिता से पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी। जिसका आप जीवन में सुखपूर्वक उपभोग कर सकेंगे। आपके मन में दान शीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे फलतः कविता सृजन में आपको सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो सकती हैं। आप एक बलशाली पुरूष होंगे तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में भी आप निपुण रहेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा सामाजिक जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे चित्रकला आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। आप स्वभाव से गम्भीर होंगे तथा गम्भीरता तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन श्रद्धाभाव रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान भी स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। आपके अपने बन्धुवर्ग से संबंध सामान्य तथा औपचारिक रहेंगे। आपको केवल प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही वश में किया जा सकेगा। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोलाकृति लिए अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होंगे। साथ ही हाथ एवं कन्धे भी लम्बाई में अधिक हो सकते हैं। आपका सीना विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के समीप निवास करना या भ्रमणादि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील ही रहेंगे। आप कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में हमेशा सफल रहेंगे। साथ ही आप हमेशा हृदय से प्रसन्नचित रहेंगे। अनावश्यक चिन्ता या दुःख आप नहीं करेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेगी। आप में कृतज्ञता का गुण विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका आभार मानेंगे तथा हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप बोलने में भी निपुण रहेंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आसानी से सिद्ध कर लेंगे। आप एक त्यागी पुरूष होंगे तथा जीवन में कई बार इस प्रवृति का पालन भी करेंगे। आपमें साहस तथा बहादुरी का भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप समस्त कार्यो को निर्भीकता से सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्राय असमर्थ ही रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोंगों के प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं में आप प्रवीणता को प्राप्त रहेंगी तथा स्वभाव से ही अन्य लोगों के समक्ष विनम्रता का प्रदर्शन करेंगी। आपका चरित्र भी उत्तम रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए उदाहरण योग्य होंगी। आपकी प्रवृति किसी भी बात को स्पष्ट रूप से रहने की रहेगी। इससे सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे तथा आपसे प्रसन्न भी रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर तथा सुगठित रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में सर्वश्रेष्ठ रहेंगी तथा समस्त पारिवारिक जन आपको यथा योग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप चित्रकारी तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विशेष सफलता या ख्याति भी अर्जित कर सकती हैं।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक बहादुर तथा साहसी महिला होंगी तथा जीवन मैं सत्य का अनुपालन करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगी एवं इसे अपना मुख्य कर्तव्य समझेंगी। आप स्थिर कार्यो को करने में रूचिशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी चंचलता से दूर स्थिर ही रहेगी। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सर्वदा आदर तथा स्नेह का भाव रहेगा तथा ईर्ष्या या द्वेष के भाव से आप प्रायः मुक्त ही रहेंगी। आप एक सुयोग्य एवं गुणवान पुरूष की पत्नी बनने का भी सौभाग्य प्राप्त करेंगी। आपका शरीर स्थूलता से भी युक्त रहेगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सुसम्पन्न रह कर समाज में पूर्ण रूपेण सम्माननीया तथा लोकप्रिय रहेंगी। धार्मिक प्रवृति होने के कारण आप ब्राहमणों देवता तथा गुरूजनों की भी पूर्ण सेवा तथा सम्मान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करेंगी। लेकिन सहनशीलता के भाव का आप में सर्वदा अभाव रहेगा। जिससे कभी कभी आपको अनावश्यक परेशानियों का भी सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि का चन्द्रमा प्रायः अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण या क्रय विक्रय आदि कार्यों को आरम्भ न करें। अन्यथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फलों की ही प्राप्ति होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या प्रोन्नति में बाधा तथा अन्य कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पति के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल, तथा हल्दी आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्यपात्र को दान करना चाहिए इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी एवं शुभ फलों में वृद्धि होगी जिससे आपकी समस्त विघ्न वाधाएं दूर होंगी एवं अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

पाया विचार

parth pawar

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

Kainath

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यो को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विव्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

parth pawar

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः धार्मिक कार्य कलापों में आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। तथा देवताओं एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। कभी कभी गर्व की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी। तथा समाज में अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का आप प्रदर्शन करेंगे। दया एवं करूणा की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। शारीरिक रूप से आप बलशाली रहेंगे तथा स्वभुजबल से अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही विविध प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा तथा अन्य बहुत से लोग आपके द्वारा सुख को प्राप्त करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

समाज में आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से सम्पन्न रहेंगे। आपकी आँखे भी बड़ी बड़ी रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगे। आपका वर्ण सुन्दरता लिए गौर वर्ण होगा। नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगे अर्थात् आप किसी नगर या समाज के गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

Kainath

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार आप इनका पूजार्चन करती रहेंगी। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही उत्तेजित हो जाएंगी तथा छोटी छोटी बातों में अभिमान का प्रदर्शन करेंगी। मन से आप दयालु रहेंगी तथा शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी। साथ ही आप अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी पूर्ण ज्ञान रखेंगी। आप अत्यन्त बुद्धिमती महिला होंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। आपके द्वारा अन्य कई लोग भी सुख को प्राप्त करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा आपके मन में दानशीलता की भावना भी हमेशा विद्यमान रहेगी। जिसका आप जीवन में समय समय पर पालन करती रहेंगी। आपकी प्रवृति सादगी युक्त रहेगी तथा अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे के प्रति आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का अल्प परिश्रम से ज्ञान प्राप्त करेंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में सम्मान तथा ख्याति को अर्जित करेंगी।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

parth pawar

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही परोपकार की भावना से युक्त रहेंगे। तथा अन्य जनों की भलाई के कार्यो को नित्य चतुराई से सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान को अर्जित करने में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा अन्य धनी लोग भी आपका हृदय से आदर करेंगे। साथ ही आप विद्वान होंगे एवं कई संस्थाओं के प्रधान या अध्यक्ष भी हो सकते हैं। माता पिता का आपके प्रति अत्यन्त ही स्नेह का भाव रहेगा एवं आपका भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

Kainath

वानर योनि में जन्म लेने के कारण आप में कभी कभी चंचलता के भाव की प्रबलता रहेगी। मीठी वस्तुओं का भक्षण करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसके लिए आप अत्यन्त ही प्रयत्नशील रहेंगी। धन के प्रति आपकी विशेष आसक्ति रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही व्याकुलता तथा आतुरता का प्रर्दशन करेंगी। आप में कामभावना की भी प्रबलता रहेगी। साथ ही आपकी सन्ततियां अत्यन्त गुणवान तथा बुद्धिमान होंगी। आपकी प्रवृति विवाद में भी रूचिशील होगी। अतः यदा कदा आपका अन्य जनों से परस्पर विवाद होता रहेगा। आप एक बहादुर तथा साहसी महिला होंगी तथा साहस पूर्वक अपनी विषम परिस्थितियों का सामना करके उनका समाधान करेंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

parth pawar

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

Kainath

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना

सहयोग प्रदान करेंगी।

parth pawar

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

Kainath

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

parth pawar

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

Kainath

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब

कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

parth pawar

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

Kainath

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

parth pawar

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

Kainath

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

parth pawar

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

Kainath

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

parth pawar

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

Kainath

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

parth pawar

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

Kainath

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

parth pawar

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

Kainath

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

parth pawar

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त प्रवृति से युक्त होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह के क्षेत्र में ये निश्च्छल होते हैं। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को ये परिश्रम तथा पराक्रम से अर्जित करके आनंदपूर्वक इसका उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। समाज एवं देश के कल्याणकारी कार्यों में ये अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। अन्य जनों की आंतरिक भावना को ये शीघ्र ही समझकर अपनी बुद्धिमता एवं चतुराई का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में किसी सम्मानित पद को अर्जित करके समाज में यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा आपके कार्यकलापों पर बुद्धिमता की स्पष्टछाप मिलेगी। इससे आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश भी प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा।

जीवन में यद्यपि आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा परन्तु परिश्रम पराक्रम एवं साहस से आप परिस्थितियों का सामना करेंगे तथा उन पर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे। आपको भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी तथा आनंदपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

केतु की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा इनमें सफलता भी प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे। सुखसंसाधनों को अर्जित करने की आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनको अर्जित करने में सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे लेकिन यदा कदा स्वभाव से आप उग्रता का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। अतः क्रोध आदि पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए। आप एक कर्तव्यपरायण व्यक्ति होंगे तथा समाज, कार्यक्षेत्र या देश के प्रति आप अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। आप अपने विषय के विद्वान होंगे तथा संगीत या कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आप सुख सहयोग एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों को आप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करने में सफल होंगे। आपके कर्म उत्कृष्ट रहेंगे तथा अपने श्रेष्ठ कार्यों से समाज तथा

कार्य क्षेत्र में यश एवं आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार आप एक पराक्रमी, तेजस्वी, साहसी तथा परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

Kainath

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगी जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगी। आपको स्वपरिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगी तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकती हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगी तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगी। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकती हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करती रहेंगी। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगी।

parth pawar

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकाशं समय शान्त रहना ही आपको रूचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पंसद करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्को से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

Kainath

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगी तथा आपात्काल के लिए आप के पास कुछ न कुछ धन अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की आपके मन में प्रबल भावना रहेगी तथा इससे आपको अत्यंत ही प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। अतः समय समय पर अन्य जनों को अपने घर में आमंत्रित करती रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति से युक्त रहेगा तथा समृद्धि भी बनी रहेगी परन्तु पैतृक सम्पति को अल्प मात्रा में ही अर्जित करेंगी तथा जीवन में जो कुछ अर्जित करेंगी स्व परिश्रम तथा पराक्रम से करेंगी।

यह भाव वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा बुध ग्रह वाणी का प्रतिनिधिग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में मृदुता तथा ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित दौरान आपकी- ठोस तर्को से सहमत भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त अपने विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेंगी। आप अधिकांश धन अपनी विद्वता से अर्जित करेंगी। तथा जीवन में अन्य भौतिक सुख संसाधन तथा स्वर्णादि धातुओं की भी प्राप्ति होगी। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

parth pawar

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे परन्तु आयु के साथ.साथ आपसी संबंधों में तनाव भी हो सकता है। आप अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथायोग्य आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे वक्ता होंगे तथा भाषा पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा।

संचार की सुख सुविधाओं यथा वाहन, दूरभाष तथा दूरदर्शन आदि उपकरणों से सम्पन्न रहेंगे। आप संगीत के प्रिय होंगे एवं कला के प्रति भी आपकी रूचिशीलता रहेगी। आपका कंठ मधुर रहेगा जिससे अन्य जनों को अपने गायन से आकर्षित कर सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम आप अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगे उसके बाद ही संगीत आदि कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप समय समय पर यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको भविष्य में इच्छित लाभ होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। आपकी पड़ोसी देशों की यात्राएं भी हो सकती हैं। इसके साथ ही पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध रखना पसन्द करेंगे। नीति के आप ज्ञाता होंगे अतः आम चुनाव लेख लिखने या पुस्तक आदि प्रकाशन से भी आप ख्याति तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या के ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव तथा मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक वृति के पुरूष होंगे ।

Kainath

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप प्रसन्नचित महिला होंगी तथा स्मरण शाक्ति भी तीव्र रहेगी एवं दीर्घकाल तक किसी दृष्ट वस्तु को नहीं भूलेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन भी शीघ्रता से करेंगी। जीवन में भाई बहिनों से युक्त रहेंगी तथा उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आप उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी परन्तु यदि कभी वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते या प्रतिकूल व्यवहार करते है तो आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी। साथ ही पारिवारिक शान्ति के लिए ऐसे अवसरों की उपेक्षा भी करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा उत्तेजना में कभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगी। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगी तथा समाज में आदरणीय समझी जाएंगी। आपको संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा टेलीफोन दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुखी एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करेंगी।

आपको रोमांटिक संगीत प्रिय लगेगा तथा यदा कदा इससे मित्रों का मनोंरजन भी करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी होंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही यात्रा के मध्य आपके नवीन मित्र बनेंगे। संबंधियों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं अध्ययन कार्य के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचल तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। साथ ही सेवक वर्ग की बहुलता रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

parth pawar

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाएं रखेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पत्नी के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगे। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगे। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगे तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगे। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकते है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

Kainath

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति

होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप ऐश्वर्यशाली महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकती है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकती हैं।

parth pawar

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विद्वान के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त ही भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको संतति प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे लेकिन माता-पिता की आज्ञा का पालन वे अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा अपनी मर्जी के कार्य ही अधिक करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे आपकी सेवा में व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा वृद्धावस्था के लिए अपने लिए यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगी। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगे लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगे परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

Kainath

आपके जन्म समय में पंचमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। तथा केतु भी अपनी उच्च राशि में होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगी। आप एक निपुण महिला होंगी तथा शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की शक्ति आप में विद्यमान होगा। साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी आसानी से करेंगी। वैदिक साहित्य एवं दर्शन शास्त्र में आपकी रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर रहेंगी। साथ ही आधुनिक विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी विद्वता का प्रदर्शन करेंगी फलतः समाज में आप एक आदरणीय विदुषी के रूप में प्रतिष्ठित होंगी।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा आपका प्रेम मर्यादित एवं आदर्शवादी होगा तथा दोंनो के मध्य भावनात्मक सम्बन्ध बने रहेंगे। इससे आपका प्रेम विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है। जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

उच्चस्थ ग्रह की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र भी अवश्य होगा। आपकी सन्तति बुद्धिमान, गुणवान एवं पराक्रमी होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता - पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में तत्पर होंगे। वे समस्त सांसारिक महत्व के कार्यो को माता पिता के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता से ही करवाएंगी। वृद्धावस्था में वे माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा प्रारंभ से ही इस क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप भी यत्नपूर्वक उनकी शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था करेंगी तथा आधुनिक परिवेश प्रदान करेंगी। आपकी सन्तति व्यवहार कुशल एवं स्वभाव से मिलनसार प्रवृति के होंगे। अतः अन्य समाजिक जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपको अपनी सन्तति पर गर्व होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

parth pawar

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा शत्रुता के भाव की हमेशा उपेक्षा करेंगे। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते है परन्तु आपके शत्रु इसमें बाधाएं उत्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही वे आपके सम्मान को हानि तथा सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करेंगे। इसे रोकने के लिए आप समयानुसार कोर्ट या मुकद्दमे आदि का सहारा ले सकते है। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रुपक्ष का सामना करेंगे तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा आपके सद्मित्रों का मंडल भी आपको सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा पारिवारिक या बन्धुवर्ग से भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च नैतिकता का अनुपालन करेंगे अतः शत्रुपक्ष को पराजित करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में सक्रियता से कार्यरत होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएंगे।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी होगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा इससे आपकी महानता में वृद्धि होगी। जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आएंगे जब आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि इनसे जीवन में आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता रहेगी तथा वे आपको कम ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा आपको मुकद्दमे आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में इसमें विजय प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप समाज में एक माननीय पुरूष होंगे तथा अपने अच्छे संबंधों से आपको सभी लोगों से यथोचित सहयोग एवं सम्मान मिलता रहेगा।

Kainath

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में मजबूत विपक्ष या शत्रु का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रही हों या स्वयं का कोई व्यवसाय चला रही हों तो सहयोगियों या साझेदार आदि से आपका विरोध या शत्रुता का भाव अपरिहार्य कारणों से उत्पन्न हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक किसी के साथ भी शत्रुता के भाव की उपेक्षा करेंगी परन्तु आपके कार्य कलापों से अन्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे। इसी संदर्भ में कोई मुकद्दमे बाजी प्रारंभ हो सकती है परन्तु आप अपने धैर्य बुद्धिमता शान्ति तथा प्रतिभा से शत्रु या विरोधी

पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी तथा शत्रु की गतिविधियों से कभी भी विचलित नहीं होंगी।

आपकी सेवा करने के लिए आपके पास नौकर होंगे लेकिन उनकी संख्या अधिक रहेगी। अतः उनमें से कोई एक आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः नौकरों का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी का पालन करना चाहिए। आपके संबन्धी भी आपके लिए कार्य क्षेत्र में यदा कदा हानिकारक सिद्ध हो सकते है तथा वे ही आपके वास्तविक शत्रु होंगे। अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

आप आवश्यकतानुसार सीमित व्यय करने की उत्सुक रहेंगी। अतः ऋण आदि लेने के अवसर बहुत कम आएंगे परन्तु युवास्था में स्थिति आ सकती है लेकिन आप उसका यथासमय भुगतान करने में समर्थ रहेंगी। मामा मामियों का आपके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे साथ ही मामाओं पर मामियों का अधिकार होगा। आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यद्यपि आप मुकद्दमे आदि की उपेक्षा करेंगी तथा कोर्ट से बाहर ही मामलों खत्म करने की इच्छा रखेंगी। यदि ऐसा नहीं होगा तभी आप कोर्ट में जाएंगी। इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से विरोधियों का दमन करके शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

parth pawar

आपके जन्म समय सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शनि भी स्वगृही होकर सप्तम भाव में ही स्थित है। मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी चंचल, वात प्रवृति एवं धनवान होता है। साथ ही स्वगृही शनि के प्रभाव से तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी भी होता है एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी चंचल तेजस्वी एवं पराक्रमी महिला होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। उनके उत्कृष्ट कार्य कलापों से सभी लोग प्रसन्न होंगे। साहित्य एवं कला के प्रति भी वे रूचिशील रहेंगी तथा अवसरानुकूल इस पर अपना समय व्यतीत करेंगी। कर्तव्य परायणता के भाव से भी वह युक्त होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर होंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी ऊंचा होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह दर्शनीय होंगी तथा सभी अंग प्रत्यंग में पुष्टता एवं सुडौलता रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा एवं अन्य लोग भी आकर्षित होंगे। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। स्वगृही शनि के प्रभाव से भौतिकता के प्रति भी आकर्षित होंगी एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्परता का परिचय देंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा परन्तु स्वगृही होने के कारण कोई परेशानी नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा या शनि के प्रभाव से स्वेच्छा से भी विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे इससे आपस में समानता एवं विश्वास के भाव में वृद्धि होगी जिससे संबंधों में मधुरता आएगी।

आपका विवाह किसी धनाढ्य परिवार से होगा एवं शादी में आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपहार प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे जिससे आपस में समयानुसार मेल मिलाप होता रहेगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सम्मान सेवा एवं श्रद्धा का भाव अल्प रहेगा तथा इच्छा अनिच्छा से वह उनका ध्यान रखेंगी यदा कदा तेजस्वी वाणी से उनके लिए परेशानी भी उत्पन्न करेंगी। देवर एवं ननदों से भी संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा आपस में औपचारिकता ही अधिक होगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति सामान्य रहेगी तथापि अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्ति से साझेदारी में लाभ हो सकता है। अतः सोच समझकर साझेदारी प्रारंभ करें।

Kainath

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है साथ ही वह तेजस्वी पराक्रमी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के स्वाभिमानी व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगे। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगे तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगे परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगे।

आपके पति का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा लेकिन अग्नि तत्व सूर्य एवं वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में कुंभ राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही वर का चुनाव करेंगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से आपके संबंध अच्छे होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह का भाव विद्यमान होगा।

आपके पति का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। परंतु अत्यावश्यक होने पर ही सोच समझकर साझेदार का चुनाव करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

parth pawar

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगे क्योंकि आप एक व्यावहारिक पुरूष होंगे तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको अच्छा नहीं लगता। पैतृक सम्पत्ति आपको प्राप्त होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं परन्तु इसका आप पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा क्योंकि स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपके पास प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य होगा। साथ ही आवश्यक सुख संसाधन भी उपलब्ध होंगे। आप का दहेज के लेन देन में कोई विश्वास नहीं रहेगा तथा न ही आप उसे स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप इस सामाजिक बुराई के प्रति अन्य जनों को भी जागरूक करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आपके घर में कोई चोरी आदि की भी संभावना है लेकिन यह सामान्य होगी तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा पुलिस या अन्य जनों की सहायता से आपका चोरी का समान वापस मिल जाएगा जिससे हानि नहीं होगी। बीमा आदि करने से आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः आप इस पर अनावश्यक रकम या पूंजीनिवेश न करें। केवल चोरी के मामलों में प्रौढ़ावस्था में आपको बीमे का लाभ मिल सकता है।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि न्यूनाधिक रूप से आप दुर्घटना से कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्यतया सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

Kainath

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा आध्यात्म, ज्योतिष तथा तंत्र मंत्र आदि पर पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही इसका उचित ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। आपकी पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप इससे लाभान्वित होती रहेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अवश्य होगी तथा किसी वृद्ध जन की जायदाद भी आपके नाम हो सकती है। आप सामान्यतया सर्व प्रकार से खुशहाल रहेंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनेंगी। आपके पास एक से अधिक आवास स्थल भी हो सकते हैं। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा एवं ससुराल पक्ष धनऐश्वर्य से युक्त रहेगा ।

बीमा आदि करवाने से आपको समय समय पर लाभ हो सकता है परन्तु दीर्घावधि की अपेक्षा लधुअवधि के बीमों से आपको शीघ्र एवं उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा सम्बधित वस्तु की भी पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपकी

कुंडली में चोरी आदि का कोई विशेष योग नहीं है। यद्यपि एक बार चोर अवश्य इसके लिए प्रयत्न करेंगे लेकिन किसी कीमती वस्तु को ले जाने में असफल रहेंगे अतः आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं की पूर्ण सुरक्षा रखनी चाहिए। साथ ही दुर्घटना आदि की उपेक्षा के लिए आपको तेज वाहन नहीं चलाना चाहिए साथ तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए सतर्क रहना चाहिए। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

parth pawar

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित दौरान आपकी- मन में इसके लिए पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी। ध्यान या समाधि के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। आपकी अर्न्तदृष्टि प्रबल रहेगी अतः ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही धर्माचार्य या कोई उपदेशक भी हो सकते हैं। आप नियमित रूप से भगवत पूजा करेंगे तथा वेद एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपकी विद्वता रहेगी तथा इन विषयों पर आप धाराप्रवाह, लम्बे समय तक भाषण या उपदेश देने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप किसी धार्मिक संस्था के संस्थापक संचालक या अध्यक्ष अथवा सक्रिय सदस्य भी हो सकते हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगे इससे समाज से ख्याति तथा मान सम्मान अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रंथों का भी व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करेंगे। दैनिक पूजन आदि करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी फलतः आपके पूर्वाभास सत्य होंगे तथा अन्य जनों के प्रति सही भविष्यवाणियां भी करने में समर्थ रहेंगे।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको प्रसिद्धि तथा धनऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकते हैं। साथ ही परोपकार तथा सामाजिक जनों की भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगे अपने पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा पूर्वजन्म के पुण्यों से इस जीवन में आनन्द एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक साधुजनों के सेवक मंदिर तालाब आदि परोपकार के लिए बनाने वाले एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगे।

Kainath

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान अवश्य करेंगी परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि आपके द्वारा यह विधान कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया है। धार्मिक कार्यो पर व्यय करने में भी अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगी जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि की भी इच्छुक रहेंगी। तीर्थ स्थानों की यात्रा में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि भीड़ भरे वातावरण आप अपने लिए असुविधा जनक समझती हैं। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने में

भी रूचिशील रहेंगी। साथ ही अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी फलतः आपके द्वारा की गई भविष्य वाणियां प्रायः सत्य सिद्ध होंगी।

आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगी एवं विकट परिस्थितियों में भाग्यबल से समाधान हो जाएगा तथा आप सुरक्षा की अनुभूति करेंगी। लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ सम्मान तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित होगी। पौत्रों से आपको खुशी एवं सहयोग मिलेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सम्मान ऐश्वर्य एवं खुशहाली प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा की प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगी ।

parth pawar

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। मेष राशि अग्नितत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से युक्त होगा। तथा श्रम के भाव की अल्पता रहेगी तथा जीवन में आप वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करके मानसिक शांति की अनुभूति करेंगे।

आप के लिए आजीविका सेना, पुलिस, डाक्टर, इंजीनियर, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत इंजीनियरिगं, होटल प्रबंधक या कर्मचारी, अग्नि से संबधित विभाग, शस्त्र विभाग एवं अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से आप को वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्जवल भविष्य एवं चरमोन्नति के लिए उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करें।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों के व्यापार से सुवर्ण लोहा तथा अन्य धातु कार्यो से, विद्युत उपकरणों का व्यापार या उत्पादन, औषधि का विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक वस्तु या होटल आदि के कार्य से व्यापार में इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित होंगी। इसके साथ ही अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगे तथा आपके प्रसंसक बनेंगे। अतः व्यापार में आपको उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यो का ही चुनाव करना चाहिए।

जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप को सामाजिक धार्मिक या अन्य संस्थाओं में भी किसी उच्च पदाधिकारी के रूप में मनोनीत किया जा सकता है जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप एक अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

आपके पिता एक पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं गंभीर प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण ध्यान रहेगा तथा उच्च स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रसिद्धि में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी सामान्यतया मधुरता रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त पिता के आप एक आज्ञाकारी पुत्र भी होंगे।

Kainath

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही बृहस्पति भी दशमभाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमितत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व युक्त ग्रह है। इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की न्यूनता रहेगी। साथ ही समय समय पर आप उन्नतिकारक एवं लाभदायक परिवर्तन भी करती रहेंगी।

बृहस्पति के दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका की दृष्टि से शिक्षा विभाग, न्याय विभाग, वकील, न्यायाधीश, सचिव, सलाहकार, बैंक क्षेत्र, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग उत्तम एवं अनुकूल होंगे तथा राजनीति में भी इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आजीविका के लिए आपको यत्नपूर्वक इन्हीं विभागों एवं क्षेत्रों का चुनाव करना चाहिए। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर ब्रोकर या क्रय विक्रय, वितकम्पनी में पूंजीनिवेश, किसी कम्पनी का स्वामित्व या किसी संस्था के चलाने से आपको वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी जिससे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी एवं अन्य जनों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करेंगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त कार्यो या क्षेत्रों में ही अपना कार्यक्षेत्र प्रारंभ करना चाहिए जिससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

केन्द्र में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में भी सफलता मिलेगी। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक या आर्थिक संस्था में भी उच्चपदाधिकारी का भार वहन कर सकती हैं। इससे आपके यश एवं सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आदर भी प्रदान करेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित एवं शांत प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं अन्य जनों के लिए भी वे भलाई के कार्यो को करने में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव होगा एवं शिक्षा की उच्चस्तर पर व्यवस्था करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के प्रति उनका विशेष योगदान रहेगा। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्यकलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा आपस में वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समता होगी। इसके अतिरिक्त आप एक आज्ञाकारी पुत्री होंगी तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में पिता के सलाह एवं सहयोग लेते रहेंगी। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

parth pawar

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही महत्वाकांक्षा के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा इन सबकी प्राप्ति जीवन में दृढ़ता एवं परिश्रम से करने में समर्थ रहेंगे। प्रचुर मात्रा में आय के साथ साथ आपकी बचत करने की प्रवृत्ति भी रहेगी अतः आर्थिक रूप से आपको कभी परेशानी नहीं होगी। बड़े भाई बहिनों से आपको विशिष्ट सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता विद्यमान रहेगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाना पसन्द करेंगे तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक तरीकों से आप मित्रों तथा अन्य जनों का मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान को रखने वाले व्यक्तियों से अधिक रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन मित्रों के सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में एक आदरणीय तथा प्रतिष्ठित पुरूष समझें जाएंगे। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा सहयोग प्रदान करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदा कदा आप स्वयं अत्यंत ही एकाकीपन की अनुभूति भी करेंगे। जीवन में आपको समाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। साथ ही खेल आदि के क्षेत्र में भी में भी आप दक्षता प्राप्त कर सकते है । इस प्रकार आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Kainath

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी। साथ ही अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को समय समय पर परिश्रम एवं पराक्रम से पूर्ण करने में सफल होंगी। अपनी चतुराई तथा कार्यकुशलता से आप सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। आप की प्रवृति सक्रिय रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने से धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। लेखन, कमीशन, प्रेस,समाचारपत्र तथा व्यापारादि से आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। यदि आप कहीं भी कार्यरत नहीं तो आपके पति इनसे लाभ अर्जित करेंगे। आपका ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से अधिक लगाव रहेगा तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगी तथापि भाइयों से आपको समय समय पर सहयोग मिलता रहेगा ।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली की आप सम्मान्नीया

सदस्या होंगी तथा इनके मध्य आनन्द की अनुभूति करेंगी। आपके समस्त मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे जिससे परस्पर कई विषयों पर तर्क वितर्क करेंगे इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। समाज या अपने क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठत एवं ख्याति प्राप्त होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोगो की भलाई तथा सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगी जिससे समय समय के साथ आपको किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगी तथा उनसे संबंध स्थापित करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

parth pawar

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगे। आप एक ईमानदार व्यक्ति होंगे अतः बेईमानी को सहन करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही धन को आप अपने परिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे।

जीवन में आपको आर्थिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। आपकी आवश्यकताएं अत्यंत ही सीधी सादी होंगी क्योंकि आप भौतिकता की ओर नहीं भागते तथा सामान्य रूप से ही आवश्यक वस्तुओं को घर में रखेंगे। आप शीघ्र लाभ की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ के प्रति अधिक इच्छुक रहेंगे। प्रारंभ से ही धन संग्रह के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ बचत भी करेंगे। अतः आपके समस्त पारिवारिक एवं सांसारिक व्यय आवश्यक रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति विशेष प्रभावित नहीं होगी। अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य में कल्याण संबधी योजनाओं पर भी आपका व्यय होगा तथा अपने धन को बड़ी बड़ी योजनाओं या निवेशों में लगाएंगे जहां से आपको अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

परिवार की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनकी समृद्धि एवं खुशहाली के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही एक मित्र की तरह उनका पालन करेंगे। आपकी समय समय पर लम्बी दूरी की यात्राएं भी होगी जिससे लाभ होगा। आपकी यात्राएं विभागीय या व्यापार संबधी होंगी। साथ ही जीवन में आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से प्रसन्न रहेंगे।

Kainath

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा तीर्थ यात्राओं पर आपका व्यय होगासाथ ही परोपकारी संबंधी कार्य तथा ब्राह्मणो की सेवार्थ आप किसी धार्मिक स्थल का निर्माण भी करवा सकती हैं। साथ ही कुआं, बगीचा या रास्ते आदि का निर्माण करके समाज में मान सम्मान अर्जित करेंगी। साथ ही परिवार एवं वच्चों के स्तर में वृद्धि पर भी आप इच्छित व्यय होगा।

आपका सामान्य व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः अवस्था के साथ साथ आपको आर्थिक परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। आप एक स्वच्छंद प्रवृति की महिला होंगी तथा उनमुक्त हाथों से व्यय करेंगी एवं बिना अपनी आर्थिक स्थिति को देखे हुए अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएगी इससे आपके प्रभाव तथा मान सम्मान में वृद्धि तो होगी परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः ऐसे कार्यो को आप यदि सोच समझकर

सावधानी से सम्पन्न करेंगी तो आप ऐसी स्थिति से सुरक्षित हो सकती हैं। युवावस्था में आपको कई प्रकार से उतार चढ़ाव देखने पड़ेगे लेकिन व्यय जैसा भी करेंगी शुभ ही अधिक करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी तथापि भ्रमण आदि के लिए भी यात्राएं आदि होती रहेगी। साथ ही विदेश भ्रमण के योग भी बनते है तथा समयानुसार आप काफी समय तक वहां प्रवास भी कर सकती हैं। इस प्रकार आपका सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

दशा विश्लेषण

parth pawar

महादशा :- राहु
(09/12/2012 - 09/12/2030)

राहु की महादशा 09/12/2012 को आरम्भ और 09/12/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी।

आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

Kainath

महादशा :- मंगल
(27/09/2023 - 27/09/2030)

मंगल की महादशा 27/09/2023 को आरम्भ होगी और 27/09/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि हैं। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे

और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वंद्वी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र

की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

parth pawar

महादशा :- गुरु
(09/12/2030 - 09/12/2046)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 09/12/2030 को शुरू और 09/12/2046 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव, हानि और बाधा, फिजूलखर्च, व्यय, पारिवारिक अलगाव, सुदूर स्थानों की यात्रा, धोखाधड़ी और भाग्यहीनता, कैद, अस्पताल में भर्ती होना, धोखा, घोटाला, कलंक तथा गुप्त शोक, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति द्वादश भाव में तथा दृष्टि चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम भाव पर है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। यह 16 साल की अवधि आपके लिए उतार-चढ़ाव से युक्त होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु की दृष्टि द्वादश भाव से षष्ठ भाव अर्थात शत्रु भाव या रोग भाव पर होने के फलस्वरूप आपको न तो कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है और न ही कोई बड़ी दुर्घटना जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सके। आपका जीवन नियमित रहेगा।

अर्थ संपत्ति :

गुरु की अष्टम भाव अर्थात अचानक उन्नति के भाव और मांगलिक कार्य के भाव (चतुर्थ और षष्ठ भावों के अतिरिक्त) तथा चतुर्थ भाव अर्थात् सुख स्थान पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको चल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आप भोग-विलास की वस्तुओं पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव को शक्तिशाली बना रहा है। यह हानि और खर्च तथा अलगाव आदि का भाव है। इसके फलस्वरूप आप जो भी व्यवसाय शुरू करेंगे आपको एक या अनेक कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अंतिम कदम सावधानीपूर्वक लेने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण होगा तथा आपके जीवन साथी आपके साथ पूर्ण सहयोग करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे। परिवार में कुछ उदासी हो सकती है। आप अपने सुखी परिवार का आनन्द उठाएँगे।

Kainath

महादशा :- राहु
(27/09/2030 - 26/09/2048)

राहु की महादशा 27/09/2030 को आरम्भ और 26/09/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सट्टा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति

करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रूचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

parth pawar

महादशा :- शनि
(09/12/2046 - 09/12/2065)

शनि की महादशा की अवधि उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 09/12/2046 को आरम्भ और 09/12/2065 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। यह स्वाभाविक रूप से एक अशुभ ग्रह है। यह फल की प्राप्ति में बाधा तथा विलम्ब कर जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता, पर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भावों पर है जिससे उनके कार्य प्रभावित हो रहे हैं। सप्तम भाव कानूनी गठबंधन, दासता, जीवन ओर व्यापार के साझेदार, वाद-मुकदमा, विदेश में अर्जित प्रभाव व सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

सप्तम भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि की प्रथम भाव (9वें और 4थे भावों के साथ-साथ) पर दृष्टि है इसलिए आपको किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है, किन्तु आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के बावजूद आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में स्थित शनि के कारण आपको कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है और लक्ष्य की प्राप्ति में और अर्थ सम्पत्ति में वृद्धि के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पर सकता है। इसके अष्टम भाव स्वामी होने के कारण भी आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आएंगे। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील रहेगी।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सुव्यवस्थित हो सकते हैं। आपके विदेश जाने और वहाँ बस जाने की सम्भावना भी है। आप दफ्तर के कार्य से भी विदेश जा सकते हैं जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु, विदेश में आपके बीमार होने अथवा कुछ स्वास्थ्य समस्या से ग्रसित होने की सम्भावना है जिससे अन्ततः आपको देश वापस आना होगा।

पारिवारिक जीवन :

शनि के सप्तम भाव में स्थित होने के कारण आपका विवाह अच्छे कुल के धार्मिक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ होगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के कारण विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकृष्ट होंगे। आपके जीवन साथी के कारण आपके पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

Kainath

महादशा :- गुरु
(26/09/2048 - 26/09/2064)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 26/09/2048 को आरम्भ और 26/09/2064 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप ज्ञान की खोज को जारी रखेंगे और आपकी रुचि साहित्य और पुराणों के

अध्ययन की ओर होगी।

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2026

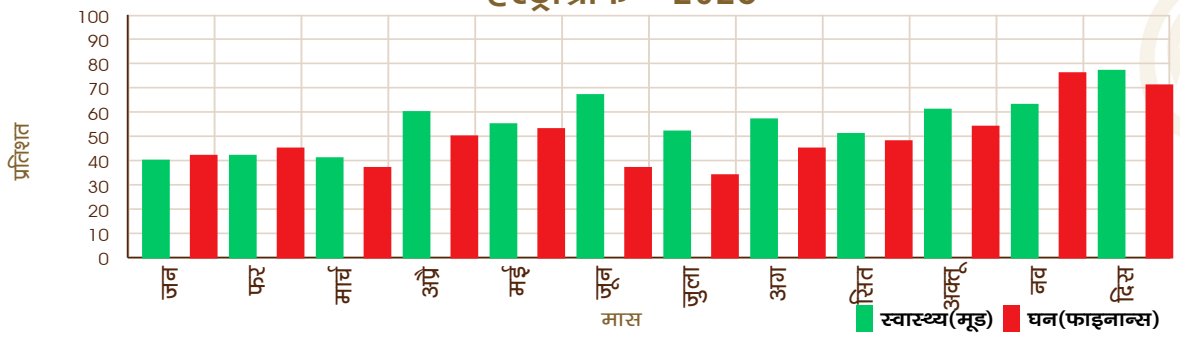

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2026

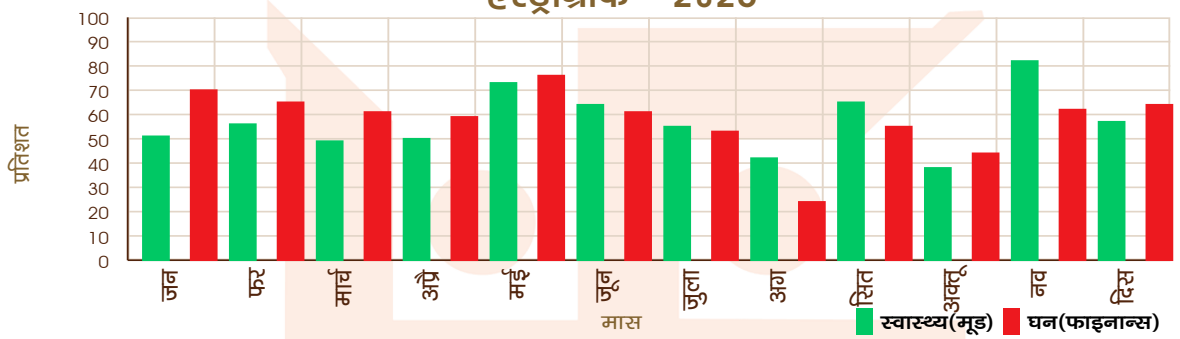

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2027

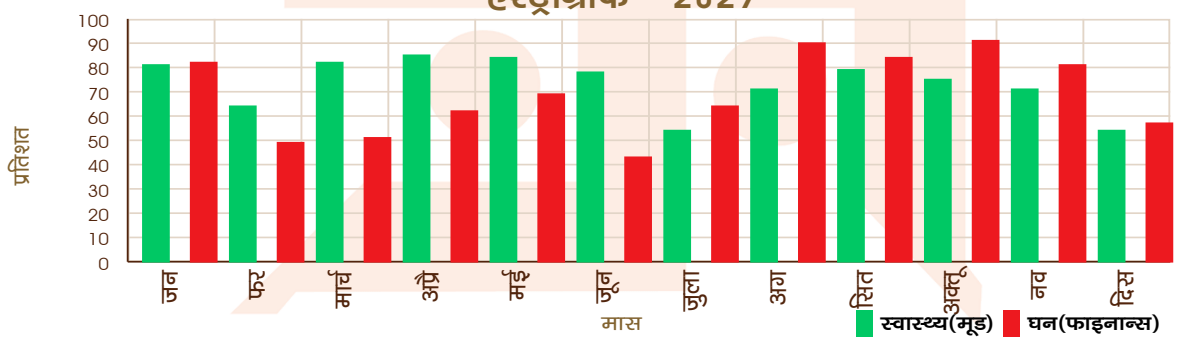

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2027

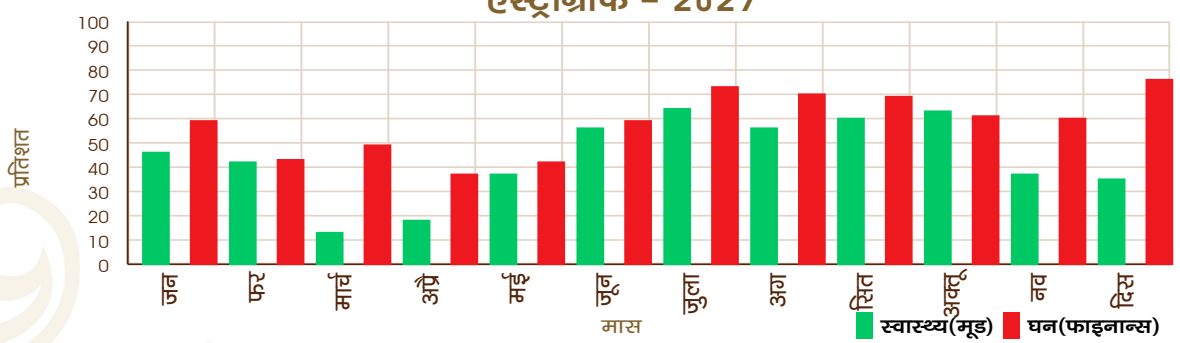

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2028

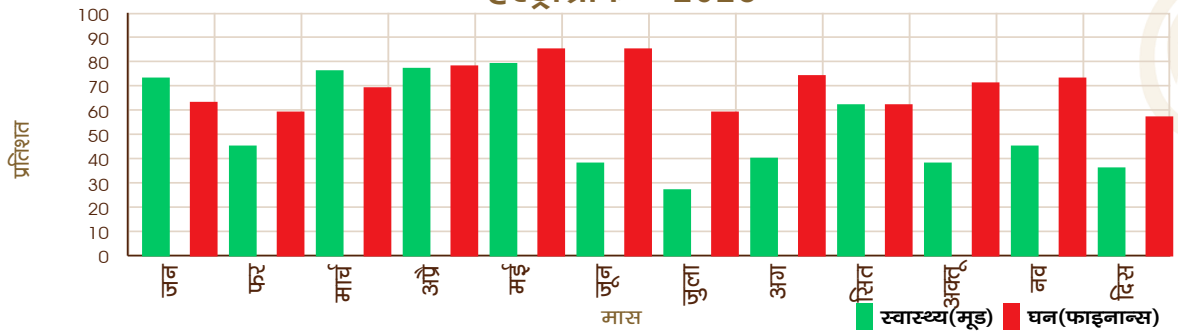

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2028

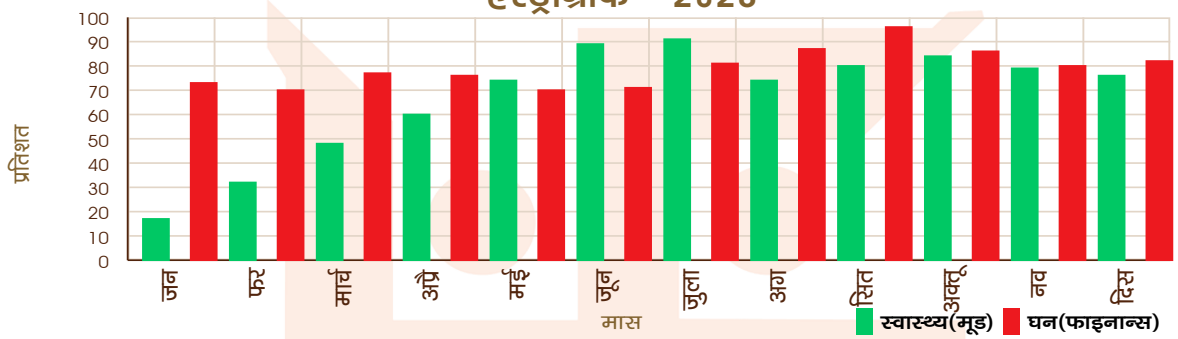

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2029

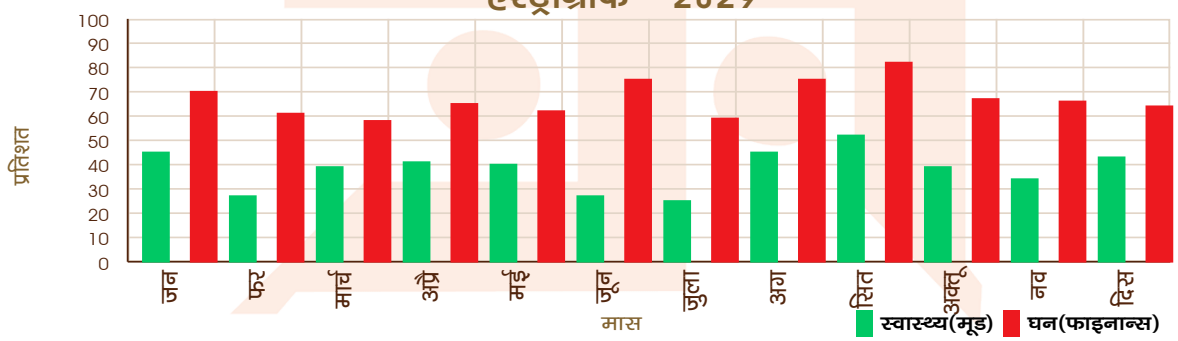

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2029

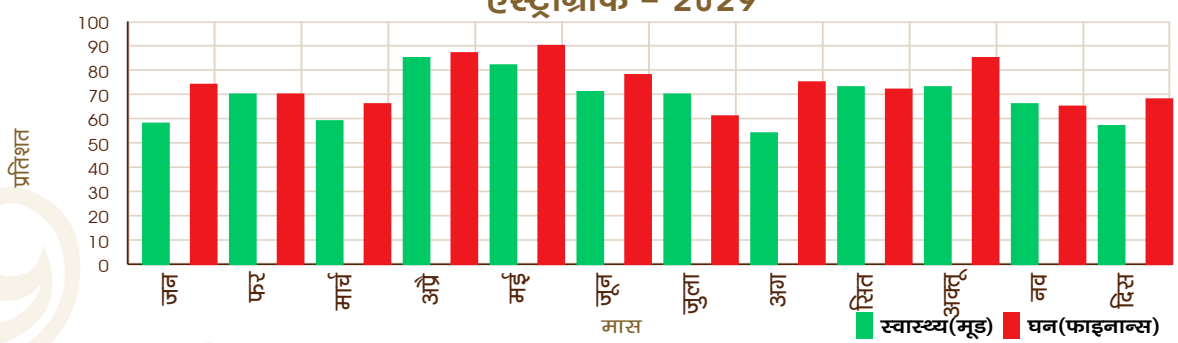

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2030

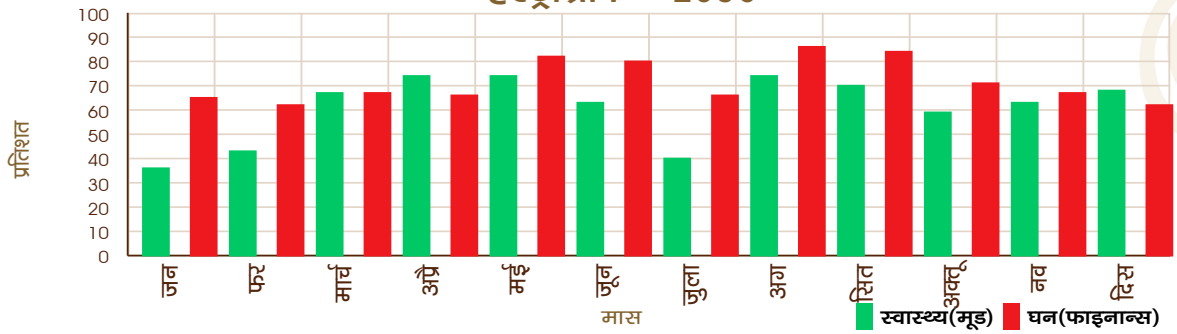

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2030

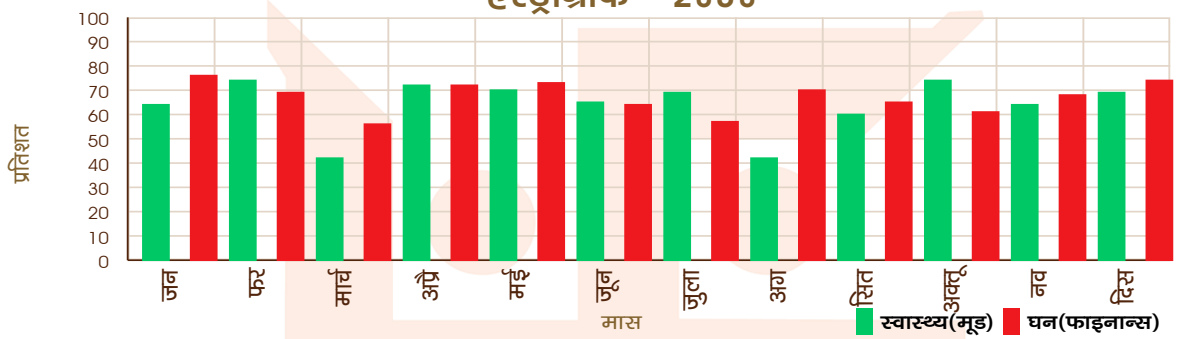

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2031

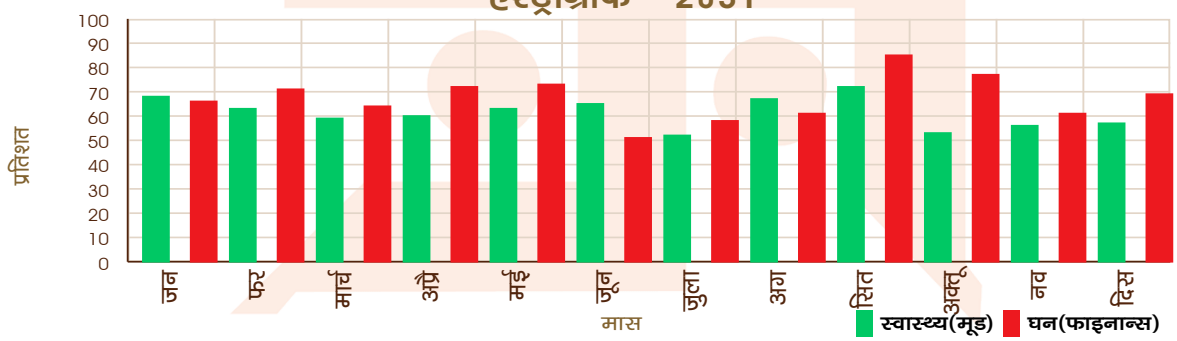

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2031

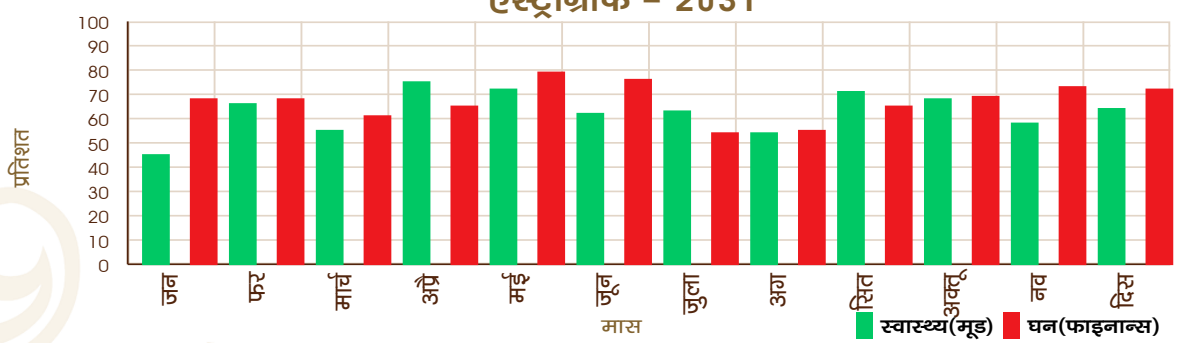

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2032

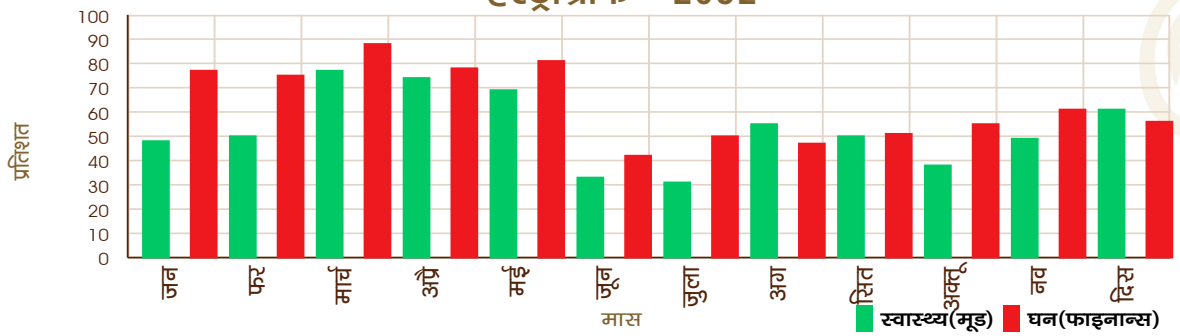

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2032

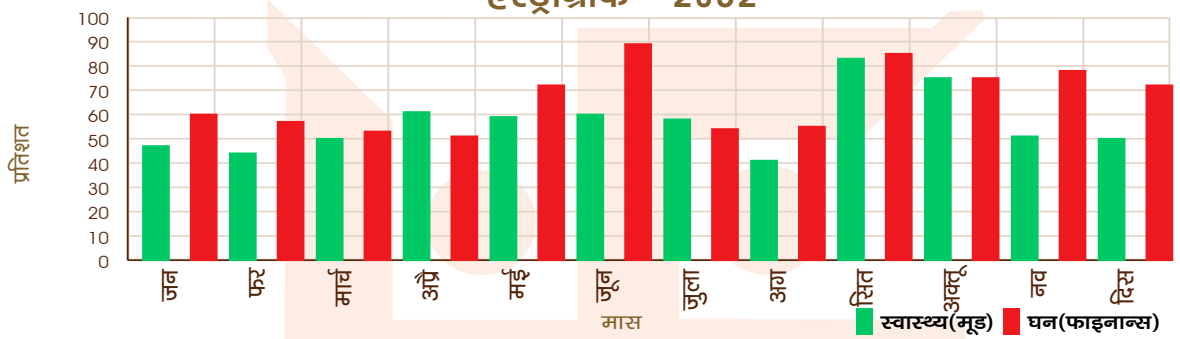

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2033

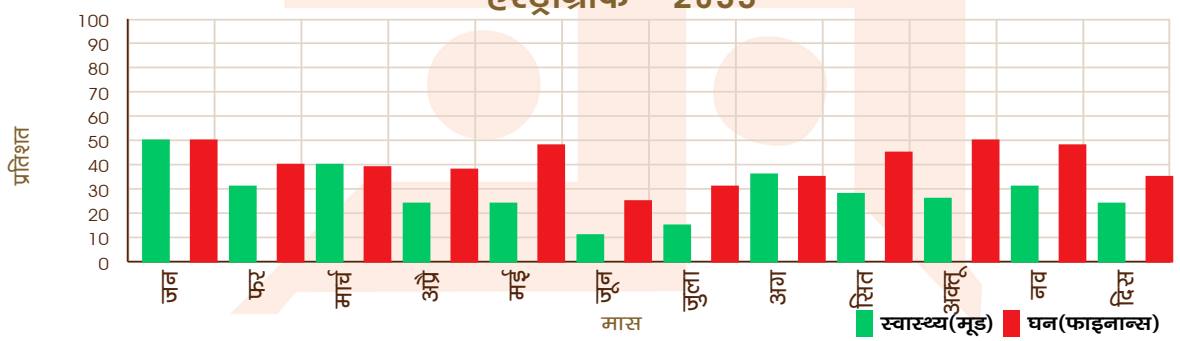

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2033

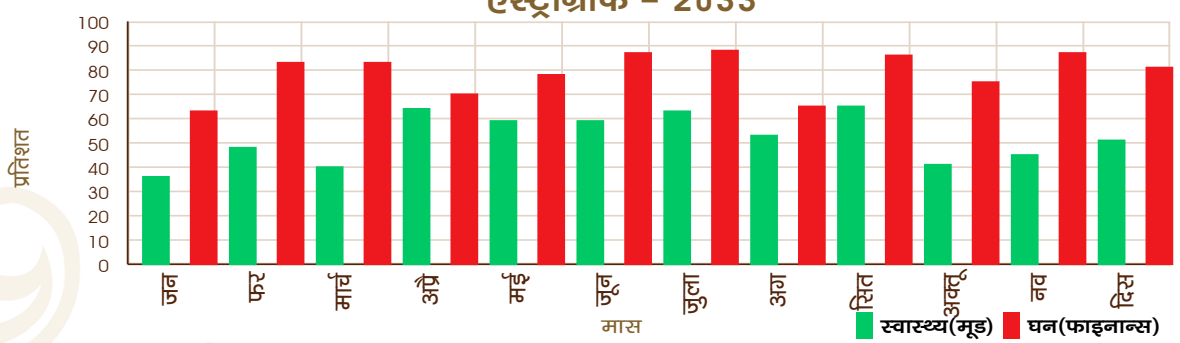

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2034

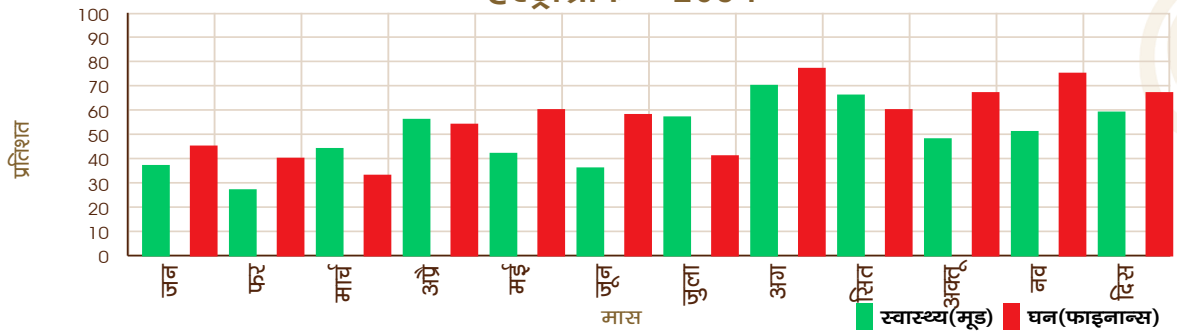

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2034

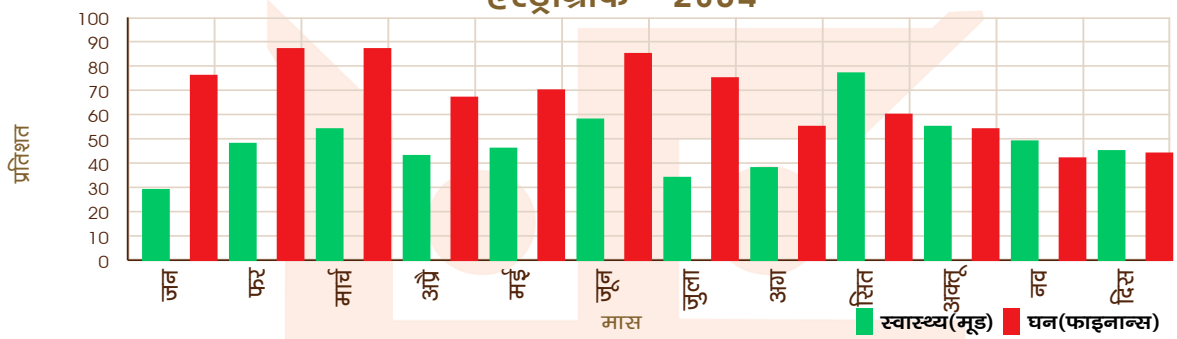

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2035

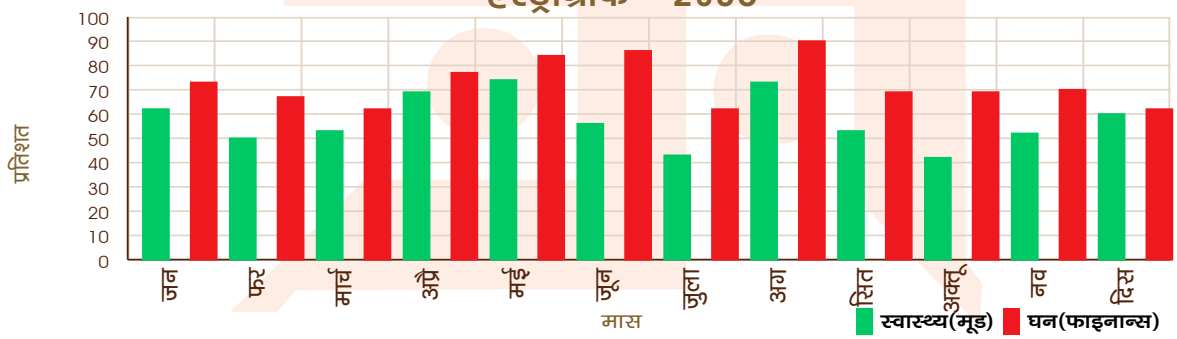

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2035

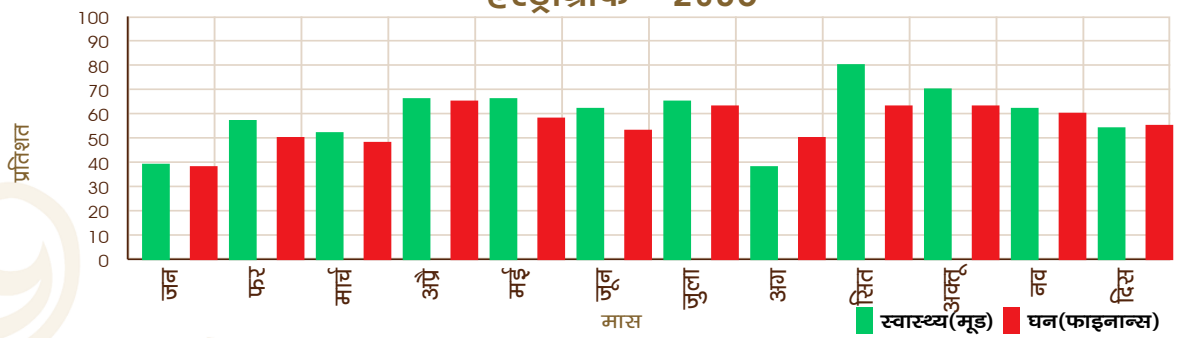

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2036

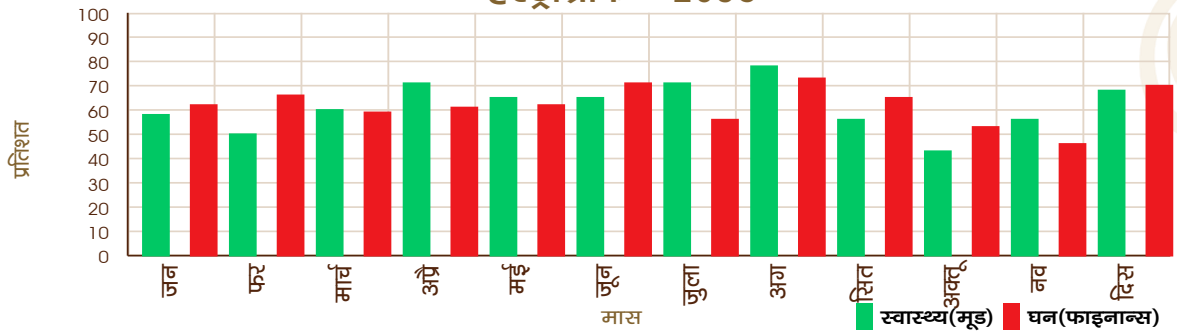

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2036

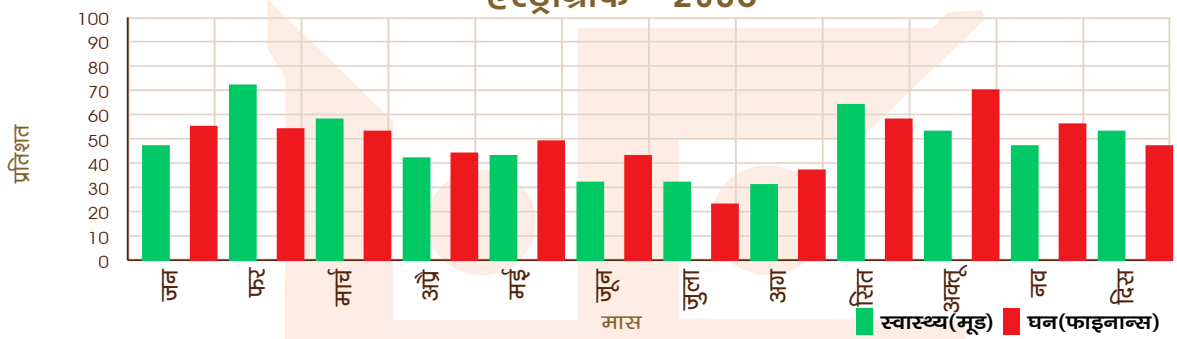

parth pawar
एस्ट्रोग्राफ – 2037

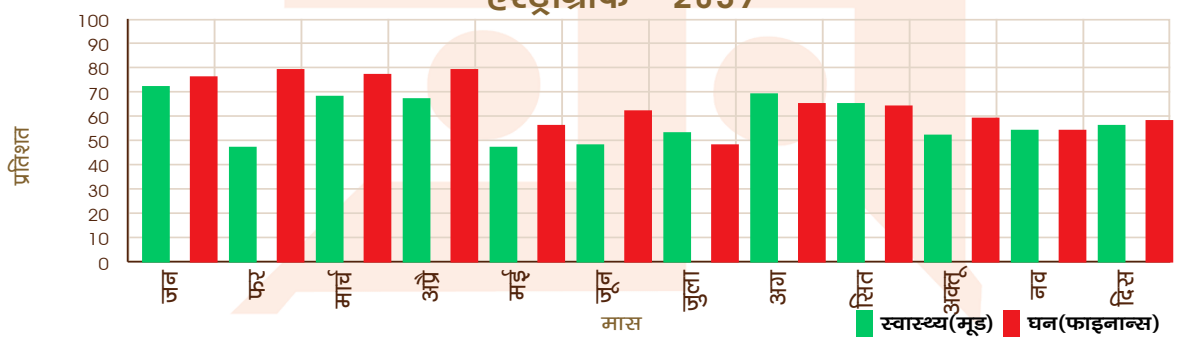

Kainath
एस्ट्रोग्राफ – 2037